

गीता परिवार

॥ गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें ॥

LEARN GEETA

तस्मात् योगी भवार्जुन

गीता मैत्री

A Learngeeta Newsletter

छमाही अंक

January 2022 - June 2022

गीता परिवार

॥ गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें ॥

संस्थापक अध्यक्ष

प.पू. स्वामी श्रीगोविन्ददेव गिरिजी महाराज

कार्याध्यक्ष

डॉ. संजय मालपाणी

उपाध्यक्ष

श्री हरिनारायण व्यास (दक्षिणांचल प्रभारी)
डॉ. आशू गोयल (उत्तरांचल प्रभारी)
प्रमिला माहेश्वरी (मध्यांचल प्रभारी)
श्री संदीप माहेश्वरी (पूर्वांचल प्रभारी)
श्री गोविंद माहेश्वरी (पश्चिमांचल प्रभारी)

कोषाध्यक्ष

श्री महेन्द्र काबरा

सचिव

श्री श्रीकांत कासट

सह सचिव

श्री गिरीश डागा

गीता मैत्री

A Learngeeta Newsletter

मुख्य संपादक

डॉ. आशू गोयल

सह संपादक

कविता वर्मा

लेखक एवं संकलनकर्ता

सौ. सोनाली काला – पुणे
श्री सुनील कापडी – मुम्बई
सौ. कविता तापड़िया – अहमदाबाद
श्री रमेश रातेरिया – कोलकाता
श्री महेश शेवले – मुम्बई
डॉ. अपर्णा होलकुंडकर – भोपाल
श्री यतीश जी विजयवर्गीय – कोटा
श्री गीत गोविन्द साहू – जगदलपुर

ई-बुक डिजाइनर

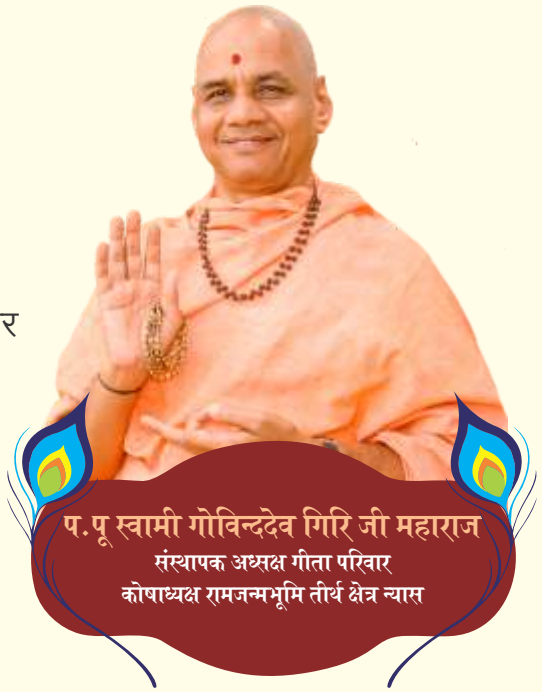
सुश्री शिप्रा सिंह
Excel Electrostat, Lucknow.

अनुक्रमणिका

सनातन ज्ञान - प.पू. स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी महाराज	1
सम्पादकीय - डॉ. आशू गोयल	2
समत्व की साधना - डॉ. संजय मालपाणी	3
विभिन्न समारोह	4 - 14
गीता चिन्तनिका सत्र	13 - 20
गीता भक्ति दिवस	21 - 25
आओ गीता सेवी बनें	26 - 27
गीता मैत्री मिलन	28
International Yoga Festival Japan Organised by Japan Patanjali Japan Foundation	29 - 30
Charm of this 'Chardham Yatra' by Shri Srivathsa Joshi, Washington DC. USA	31 - 33
Spiritual Awakening - Learngeeta.com by Smt. Anita Ravishankar, Pune	34
Class Monitoring by Smt. Shraddha Raodeo, Bhagyanagar	35 - 37
गीता मेरी प्राणवायु - श्री महेश शेवाळे, मुंबई	38 - 39
सेवा की अद्भुत मिसाल - श्री सुनील कापड़ी, मुम्बई	40
आओ गीता खेलें	41 - 58
Volunteers' Brigade	59
साधक मनोगत	60 - 62
गीताव्रती सूची	63 - 70
आँकड़ों की नज़र में...	71
Upcoming Calendar	72

You can send your articles, materials for upcoming editions at
newsletter.geetamaitri@gmail.com

सनातन ज्ञान



कभी कभी हमारे मन मे आ सकता है कि ज्ञान का निरंतर विकास होता जा रहा है और हम कैसे अनाड़ी लोग हैं जो पाँच हजार पुराने एक छोटे से ग्रंथ का पुनः पुनः अध्ययन एवं श्रवण कर रहे हैं। 'Advancement of Knowledge' का वेग आज बढ़ता जा रहा है। तो इस परिस्थिति में ऐसा प्रश्न आना स्वाभाविक है कि इतने पुरातन ग्रंथ को हम क्यों पढ़ रहे हैं।

मित्रों! हमे आज यह बात समझनी है कि यह ज्ञान पांच हज़ार वर्ष पुराना हो गया है ऐसा हमे लगता है किंतु भगवान ने तो कहा है-

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्।
विवस्वान् मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत्॥4.1॥

यह ज्ञान भगवान ने इससे पहले सूर्य से कहा था वही ज्ञान अर्जुन को बोला। कहने का तात्पर्य यह है कि यह ज्ञान न नूतन है ना पुरातन किन्तु यह सनातन है। यह ज्ञान सदा से इसीप्रकार है और जितना आवश्यक यह हमारे लिए हज़ार वर्ष पूर्व था उतना ही महत्वपूर्ण यह आज है एवं इतना ही महत्वपूर्ण हज़ार वर्षों बाद भी रहेगा। यह ज्ञान सनातन है अतः पुनः पुनः इसकी आवृत्ति करनी ही चाहिए एवं इसे आत्मसात् करने का प्रयास भी करते रहना चाहिये। जिस प्रकार यह गीता शास्त्र सनातन है उसी प्रकार शंकराचार्य जी कहते हैं यह ऐतिहासिक अर्जुन भी केवल निमित्त है गीता का उपदेश तो सनातन अर्जुन हेतु किया गया है। इतिहास में पुनः पुनः ऐसे अर्जुन निर्माण होते रहते हैं। भगवद्गीता को माँ कहा गया है।

'अम्ब त्वामनुसन्दधामि भगवद्गीते भावद्वेषिणीम्।'

अर्जुन दु:खी हैं, उन्हें अकल्पित वैराग्य उत्पन्न हुआ है। यह वैराग्य हमे भी आता है जिसके कारण कर्तव्य का त्याग होता है, ऐसी हर स्थिति में मनुष्य हेतु अति सहायक यदि कुछ है तो वह भगवद्वाणी यह भगवद्गीता है। बालक रोता है, गिरता है, भूखा प्यासा हो जाता है तो जिस प्रकार माँ दौड़कर आती है उसीप्रकार जब शक्ति की भूख लगे, जब योग्य निर्णय की प्यास लगे, जब दुःखों के कारण अवसादग्रस्त अंत:करण हो जाये और लोगों के सामने अथवा एकांत में बैठकर बस रोने का मन करे उस समय ये गीता माता दौड़कर आती हैं, इसलिए भगवद्गीता को 'माँ' कहते हैं। भगवद्गीता का उपदेश साधारण बात नही है क्योंकि अर्जुन की स्थिति अत्यन्त गंभीर है अतः भगवान तात्कालिक उपाय नही करते हैं बल्कि ऐसा उपदेश करते हैं जो न केवल उस ऐतिहासिक अर्जुन की स्थिति सुधारे किन्तु सनातन अर्जुन में यह अवसाद उत्पन्न ही न हो पाये। इसलिये यह हमारा पाथेय है।

सम्पादकीय



डॉ. आशू गोयल

क्या है गीता मैत्री ? एक पत्रिका ? एक पुस्तक ? गीता परिवार के कार्यक्रम लर्नगीता का लेखा-जोखा या हमारी उपलब्धियों की प्रतिकृति? इसमें हमारे गणमान्यों के संदेश-उपदेश हैं, कुछ भाग्यशालियों के छाया चित्र भी हैं। यह सब तो है ही परन्तु गीता मैत्री के स्वरुप किन्तु जब मन को टटोलता हूँ तो इतने से संतोष नहीं होता। अंतर्मन से एक ध्वनि स्पंदित होती है कि गीता मैत्री इससे अधिक कुछ और भी है और यह स्पंदन सदा ही प्रवाहित होते रहते हैं। बहुत चिंतन के बाद प. पू. स्वामीजी के स्मरण के साथ ही ध्यान में आता है कि गीता मैत्री इन सबसे अलग भी एक बहुत बड़ा संदेश है।

एक सज्जन ने पूछा – 'गीता मैत्री क्या है?' मैंने पूछा – 'क्या आपकी गीता से मैत्री है?' उन्होंने कहा – 'हाँ, गीता तो मेरे जीवन का अंग बन गयी है।' तो मैंने कहा कि आपकी गीता से मैत्री है तो मेरी भी आपसे मैत्री है क्यूँकि मित्र का मित्र हमारे मित्र के समान ही होता है। और गीता मैत्री गीता मित्रों का समूह है, पूरे विश्व के अलग अलग भागों से, अलग अलग भाषा-संस्कृति के गीताप्रेमियों का समूह।

अब हम पूरे विश्व से नगर-नगर, गाँव - गाँव इन मित्रों को एकत्र कर रहे हैं और गीता मैत्री मिलन कर रहे हैं, गीता मैत्री मिलन उत्सव मनाये जा रहे हैं जिसका विवरण इस तृतीय संस्करण में भी दिया जा रहा है। आज मैं देश के किसी भी कोने में जाता हूँ तो प्राय: अनायास ही गीता साधकों से भेंट हो जाती है, जब हमे पता चलता है कि वह भी लर्नगीता कार्यक्रम के अंतर्गत किसी स्तर में गीता सीख रहें हैं तो मन प्रफुल्लित हो उठता है, आँखें प्रेमाश्रुओं से पूरित हो जाती हैं उस व्यक्ति के लिए ऐसा लगता ही नहीं है कि हम पहली बार मिल रहे हैं।

कहा गया है - **'मित्र दर्शनेन आह्लाद: वर्धते'** अर्थात मित्र के दर्शन से आनन्द का वर्धन होता है और यह बात हम सभी के द्वारा अनुभव की गयी है। जब हम किसी भी गीता साधक से मिलते हैं तो हृदय की किसी निचली सतह से आनन्द की एक नयी लहर उत्पन्न हो जाती है और आनन्द की यह लहर ही साक्षी हमारी गीता मैत्री की ! और निरंतर उपन्न होने वाली आनन्द की ये लहरें ही साक्षी है हमारे गीता प्रचार की!

'गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें', **'हर घर गीता, हर कर गीता'** इस प्रकार के ध्येय वाक्य हमे प. पू. स्वामीजी के द्वारा दिये गये हैं, अब हमे गीतामय जीवन जीते हुए अधिकाधिक लोगों तक गीता को पहुँचाना है एवं जिस प्रकार भगवान ने कहा है - **"गीता मे हृदयं पार्थ"** अर्थात हे पार्थ! गीता मेरा हृदय है, उसी प्रकार हमे भी अपना मानस बनाना है एवं हमारी गीता मैत्री इसी प्रकार बनी रहे ऐसी प्रार्थना है।

यह संस्करण सभी पाठकों को आनन्द प्रदान करेगा, इसी आशा के साथ..

जय श्री कृष्ण...

समत्व का साधन



डॉ. संजय मालपाणी

भागो नहीं जागो !

गीता के उपदेश का मुख्य कारण था परिस्थितिजन्य भय के कारण हतोत्साहित अर्जुन को संबल प्रदान करना! भगवान अर्जुन के रथ की केवल डोर संभालने सारथी नहीं बनें थे, अपितु अर्जुन की बागडोर उन्होंने अपने हाथ में ली थी। जब युद्ध से अर्जुन का मन परावृत्त हो रहा है यह भगवान ने देखा तो अन्यान्य वचनों से वें अर्जुन को कर्तव्य कर्म हेतु प्रवृत्त करने में लग गये। अपनी पराजित क्षुद्र मानसिकता से अर्जुन बाहर निकले और युद्ध करे इसलिए भगवान ने आरंभ में ही अर्जुन को 'उत्तिष्ठ परंतप' (अध्याय 2.3) का आदेश दिया। अर्जुन ने युद्ध नहीं करने हेतु अनेक तर्क दिये। गुरु का हत्यारा तथा कुल का विनाशी बन रक्तरंजित हाथों से प्राप्त राज्य तथा सुख नहीं चाहिए, इसलिए शस्त्र त्याग कर पलायन करने की बात भी अर्जुन ने कही। और ऐसे विचारों से अर्जुन बाहर निकले, वह भागे नहीं अपितु जागे और युद्ध करें यह गीता का मूल उद्देश्य था।

एक ओर सोलहवें अध्याय में अहिंसा को दैवी गुणसंपद बताने वाले भगवान श्रीकृष्ण **'ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि'** अर्थात् युद्धके लिए तैयार हो जा; इस प्रकार युद्ध करने से तू पाप को प्राप्त नहीं होगा, ऐसी बात कहते हैं यह परस्पर विरोधाभास लगता है। युद्ध के अंतिम परिणाम सदैव बुरे होते हैं ऐसा हम सदैव पढ़ते आये हैं। फिर भी भगवान अर्जुन को युद्ध के लिए प्रवृत्त कर रहे है यह पढ़कर आश्चर्य होता है अतः इस संबंध में कुछ चिंतन आवश्यक है।

संघर्ष यह मानव जीवन का स्थायी भाव है। परिस्थिति से, प्रकृति से, विरोधी विचारधारा से संघर्ष तथा अपने अस्तित्व, स्वातंत्र्य और सम्मान हेतु युद्ध सदियों से चलते आये हैं। मानव जीवन के विकास की जड़ें जितनी उसकी जिज्ञासा में निहित हैं उतनी ही युद्ध में भी छिपी हुयी हैं। सारे अंतरिक्ष विज्ञान की जड़ें युद्ध सामर्थ्य को बढ़ाने के लिए किये गये प्रयासों में मिलती है। युद्ध के परिणाम कुछ समय के लिए भले ही विनाशक लगते हो, परंतु दूरगामी परिणाम भी देखने चाहिए। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अनेकों की बली चढ़ी परंतु यदि वैसा नहीं होता तो आज भी हम परतंत्र ही होते। गुरु गोविंदसिंह जी एवं उनके समस्त परिवार की शहादत ने परकीय आक्रांताओं को रोकने एवं भारतीय जनमानस के शौर्य बढ़ाने का कारण बना। छत्रपति शिवाजी महाराज युद्ध नहीं करते तो मुगलों के आक्रमण में हम पीसे जाते। दूसरे महायुद्ध में अणु बमों की मार झेलने के पश्चात जापान का स्वत्व जगा और वह देश सामर्थ्य के साथ उठ खड़ा हुआ। इतिहास के हर पन्ने पर ऐसे उदाहरण हमें देखने मिलते हैं। महाभारत का युद्ध टालने के अनेक प्रयास हुए। स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने हस्तिनापुर जाकर शांतिवार्ता का प्रयास किया। जब सारे विकल्प असफल हुए तब आरपार की लड़ाई यह एक ही पर्याय बचा था। आतातायी दुर्योधन और उसकी सेना का विनाश यही समस्या का अंतिम हल था। हस्तिनापुर साम्राज्य का उज्ज्वल हितकारी भविष्य उसी में निहित था।

कई बार हमारे व्यक्तिगत. पारिवारिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवन में ऐसी घड़ी आती है जहां हमें निर्णायक भूमिका लेनी पड़ती हैं। व्यक्तिगत बैर की भावना से नहीं अपितु समष्टि के हित में कुछ कटुता भरे निर्णय करने पड़ते हैं। गीता की सीख यहीं है कि ऐसे युद्ध से कदापि भागना नहीं चाहिए अपितु अपनी बुद्धि को स्थिर कर, समत्व में रहकर, निर्वैर होकर, विवेक को जगाकर, भगवद्स्मरण करते हुए अर्थात् जाग कर युद्ध करना चाहिए। इसी में समष्टि का अर्थात जगत् का कल्याण है।

मामनुस्मर युध्य च !

स्वागत समारोह

जनवरी स्तर–1 (L1)–15वाँ बैच

https://youtu.be/A5Tm1Srx1dg



Learngeeta कार्यक्रम के अंतर्गत स्तर-1 के 15वें बैच का शुभारंभ प. पू. स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज व पूज्य साध्वी भगवती सरस्वती जी के सान्निध्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का आरम्भ गीता परिवार के बाल कलाकारों द्वारा किया गया। बालकों द्वारा कार्यक्रम में सुंदर नृत्य व योग की प्रस्तुति की गई। सुंदर प्रस्तुति ने सभी का मन मोह लिया। **ईश्वर भक्ति भाव से बहती संस्कारों की धारा, भारत माँ की सेवा में गीता परिवार हमारा।** सुंदर गीत ने कार्यक्रम के वातावरण को मंत्रमुग्ध कर दिया यह गीत भारत माँ की सेवा में है।

आरंभिक प्रार्थना से कार्यक्रम का आरम्भ किया गया। उसके उपरांत ध्रुव एकेडमी, संगमनेर के बालकों द्वारा नृत्य के साथ सुंदर दीप प्रज्ज्वलन किया गया। गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष एवं राष्ट्रीय योग फेडरेशन के उपाध्यक्ष आ. संजय भैया मालपाणी ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत किया। संजय भैया ने अभिनंदन करते हुए कहा यह अत्यंत हर्ष की घड़ी है कि आज गीता परिवार और एक कदम आगे बढ़ा रहा है।

L1 के नए 15वें बैच के साथ लगभग **120 देशों** से लोग जुड़ चुके हैं। प. पू.गोविंददेव गिरि जी महाराज के मार्गदर्शन में गीता परिवार गत 35 वर्षों से कार्यरत है। इस करोना काल को भी संकट ना मानते हुए इसको भी एक अवसर माना और भगवद्कृपा ऐसी रही कि केवल भारत में ही नहीं अन्य देशों में भी हम गीता का प्रचार और प्रसार कर पाए। संजय भैया ने 15वें बैच में सभी का स्वागत किया और कहा गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. आशू गोयल भैया ने लर्नगीता उपक्रम को सम्पूर्ण सारथ्य प्रदान किया है, इन्होंने दिन-रात एक कर गीता के इस उपक्रम को बिना थके, बिना रुके आगे बढ़ाया है। तत्पश्चात संजय भैया द्वारा पूज्य साध्वी भगवती सरस्वती जी का एवं परम पूज्य स्वामी जी का स्वागत किया गया तथा आदरणीय आशू भैया को कार्यक्रम की बागडोर सौंपते हुए कार्यक्रम को आगे बढ़ाने का निवेदन किया गया।

आशू भैया ने साध्वी भगवती जी एवं परम श्रद्धेय



गोविंददेव गिरि जी के चरणों में प्रणाम करते हुए **15वें स्तर 1** के स्वागत समारोह में सभी का पुनः स्वागत किया। करोना की त्रासदी में गीता परिवार में भगवद्गीता

सिखाने के इस उपक्रम की शुरुआत हुई। भारत के अतिरिक्त गीता परिवार **UAE,** गीता परिवार **USA,** गीता परिवार **Canada,** गीता परिवार **जर्मनी** में भी अब कार्य आरम्भ हो रहा है। हमारे कार्यकर्ता जो वहाँ के समय में उपलब्ध हैं वे सभी कार्यरत होकर इस कार्य को संभाल रहें हैं। सभी लोग गीता की सेवा में लग गयें, भगवान की कृपा से यह कार्य निरंतर प्रचारित एवं विस्तारित होता चला गया। **13 समय सत्र** एवं **11 भाषाओं** में कक्षायें संचालित हो रही है।

गीता जी पर साप्ताहिक विवेचन संचालित होते हैं जिनमें सप्ताह भर पढ़ाए गए अध्यायों का अर्थ और उसे दैनंदिन जीवन में कैसे उतारा जाए उदाहरण के साथ समझाया जाता है। उन्होंने कहा कई लोग अपने जीवन में व्यथित थे उनको भी गीता जी का पठन करने से समाधान प्राप्त हुआ। नश्वर संसार से हमारा मोह कैसे कम करें इसकी ओर भी लोगों की दृष्टि आने लगी।

परम पूज्य स्वामी जी के अनुग्रह से एवं हमारे संतो के अनुभव से यह कार्यक्रम आगे बढ़ पाया एवं यह उपक्रम संपूर्ण रुप से संचालित हो पाया।

आदरणीय आशू भैया ने सभी **30,000** साधकों को गीता जी संस्कृत में शुद्ध रूप से सिखाने का संकल्प दोहराया।

इसके उपरांत संजय भैया ने परम पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज को निवेदन किया कि वह साधकों को संबोधित करें एवं आशीर्वाद प्रदान करें।

पूज्य स्वामी जी ने कहा मुझे 15वें वर्ग के शुभारम्भ कार्यक्रम में सम्मिलित होने में अत्यंत आनंद हो रहा है क्योंकि मेरे समक्ष सभी संतो की प्रिय साध्वी भगवती सरस्वती जी हैं जिनका मैं गीता परिवार में स्वागत कर



रहा हूं। परम पूज्य स्वामी जी ने कहा भगवद्गीता के 18वें अध्याय में लिखा है कि जो लोग गीता को पढ़ायेंगे वे मुझे अत्यंत प्रिय होंगे। भगवान की भक्ति करने का भगवान के प्रिय होने का कोई एक सरल व सुगम साधन है तो वह है श्रीभगवद्गीता। अत: यथावत गीता को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें। स्वामी जी ने कहा गीता परिवार के सभी साधक एवं कार्यकर्ता जो नि:स्वार्थ इस कार्य में निरंतर लगे हुए हैं उनका मैं अभिवादन करना चाहता हूँ। परम पूज्य स्वामी जी ने कहा वेदांत को पढ़कर सिंह का निर्माण होना चाहिए। सिंह सर्वत्र फैलकर सेवा में लग जाना चाहिए, ऐसे सिंह निर्माण कैसे होंगे, ऐसे सिंह निर्माण भगवद्गीता के चिंतन से एवं प्रचार से होंगे । स्वामी जी ने कहा मैं जहाँ भी जाता हूँ आश्चर्यचकित हो जाता हूँ। मुझे गीता परिवार के साधक मिलते हैं उनको मैं पहचानता भी नहीं पर वह सब मुझे पहचानते हैं और वह प्रसन्न कर देते हैं वह भी प्रसन्न हो जाते हैं। कोई

कहता है Level 2 में पढ़ रहा हूँ, कोई कहता है मैं Level 4 में पढ़ रहा हूँ। सभी कहते हैं गीता परिवार में सम्मिलित होकर वे अत्यंत आनंदित हैं। अन्य देशों की बहनों को गीता परिवार ने संस्कृत भाषा के शुद्ध उच्चारण में सिखाया। वे सभी प्रफुल्लित और आनंदित है, यह देखकर व सुनकर मैं स्वयं भी प्रसन्न हो जाता हूँ।

सर्वत्र इस प्रकार का वातावरण हैं। भगवान कहते हैं कि जो इस तरह के कार्य कर रहे हैं, मैं उनके सभी दुःखों को



मिटा देता हूँ ,मेरी दृष्टि उन पर होती है। भगवान कहते हैं अभी तुम डरो नहीं, मैं सर्वदा तुम्हारे साथ हूँ। इन सब लोगों में संजय भैया है, आशू भैया है तथा सभी कार्यकर्ता हैं जिन्होने यह योग्य कार्य किया है इसे ही आत्मसंयमयोग कहते हैं। स्वयं के ऊपर विजय प्राप्त किए बिना हम लोगों तक नहीं पहुंच सकते हैं आत्मसंयमयोग हमें स्वयं के ऊपर नियंत्रण करना सिखाता है।

भगवद्गीता का छठा अध्याय गीता को जानने की कुंजी है। अगर आपने छठे अध्याय को समझ लिया तो कोई भी कार्य करने का फल आपको मिलेगा क्योंकि यह मास्टर चाभी है। भगवद्गीता महाभारत का सार होने के कारण विशाल रूप में हमको दर्शन देती है। स्वामी विवेकानंद जी की महत्ता उनके वेदांत में नहीं थी, वेदांत उन्होंने बहुत अच्छे से पढ़ा था और वे एक इतिहासकार थे क्योंकि वह भारत का भूतकाल, भविष्यकाल , वर्तमानकाल की समीक्षा अच्छी तरह से कर पाते थे। इन तीनों कालों को विश्व के वातावरण में देख सकते थे विश्व के वातावरण में भारत का स्थान क्या होना चाहिए या क्या हो सकता है इसी के बारे में उन्होंने अपनी सारी बातें भारत के लोगों से कही। आप लोग भूतकाल की बातें को संग्रह करके देश का वर्तमानकाल बना रहे हैं इस ऐतिहासिक कार्य में आप सभी के सामने एक ही लक्ष्य है भगवद्गीता लोगों तक पहुँचाना तथा भारत का वर्तमान सुधारना। हमारे आशू भैया का तो व्रत है कि ना सोते हैं ना सोने देते हैं। ऐसी बड़ी टीम का उन्होंने निर्माण किया। गीता पढ़ाने वाला कभी रुकता नहीं समाज को सुधार करता हुआ गीता को पढ़ाते ही चला जाता है मन से पढ़ाता रहता है। यह कठिन कार्य आप सभी कर रहे हैं आप सभी का बहुत-बहुत अभिनंदन। आज मैं साध्वी भगवती जी को इस पर्दे पर देखकर एवं दर्शन पाकर भी प्रसन्न हूँ क्योंकि उनके रूप में मुझे भगिनी निवेदिता जी का दर्शन होता है। भगवती जी से लगभग 30 से अधिक वर्षों से मैं परिचित हूं भगवती जी परमार्थ आश्रम में रहकर एवं सारे संपन्न देशों को छोड़कर गंगा के किनारे तपस्या कर रही हैं। फिर भी उनके पास एक समृद्धि है, वह है गंगा मैया की भक्ति और भारत की संस्कृति,श्रीकृष्ण भगवान

की भक्ति। इस प्रकार से भगवान ने उनका जीवन गढ़ा है एवं ये सभी के लिए एक उदाहरण बन गई है, कई युवकों को पढ़ाती है, स्वयं अनाथ बालकों की माता बनकर कार्य कर रही हैं, यह साधारण तप नहीं है। 30 वर्षों से यह काम कर रही हैं आज हमारे साथ यह तपस्विनी जुड़ी हुई हैं। आज सारा विश्व कल्याण के लिए भारत की ओर देख रहा है, भारत का यही वांग्मय भारत की संस्कृति, भारत के ये विचार विश्व को गीतामय बनायेंगे।

हमारे हृदय में, हमारे मस्तिष्क में, हमारे जीवन में विश्व के लिए प्रेम है भगवद्गीता के श्लोक हमारी जिव्हा पर है, एवं किसी के लिए हमारे मन में कोई द्वेष नहीं है, इस प्रकार भगवद्गीता के कार्य में निरंतर लगे रहे। भगवती जी हमारे साथ हैं अत: मैं अपनी वाणी को विराम देता हूँ। इसके उपरांत आदरणीय संजय भैया ने स्वामी जी का धन्यवाद ज्ञापित किया और प्रणिपात किया एवं कहा भगवान को तो आप ने हम सभी के साथ पहले से ही जोड़ रखा है इसीलिए यह कार्य इतना सुंदर चल रहा है।

कुछ प्रशिक्षणार्थियों द्वारा गीता के कुछ श्लोकों को उच्चारित किया गया तथा उनकी कंठस्थीकरण की परीक्षा ली गई।



आदरणीय संजय भैया ने भगवती साध्वी जी का अभिनंदन किया। यह व्यक्तित्व हॉलीवुड से हिमालय तक का है,



एक पुस्तक भी इस नाम से प्रकाशित की गई है। आप लेखिका भी हैं और आपकी एक पुस्तक 'द जर्नी ऑफ फीलिंग एंड ट्रांसफॉरमेशन' लोगों ने बहुत पसंद की। लॉस एंजेलिस में आपका बचपन गया एवं स्वामी चिदानंद महाराज के द्वारा आपको सन्यास दीक्षा प्राप्त हैं, विश्व भर में आपका संचार है। आप डिवाइन शक्ति फाउंडेशन के प्रेसिडेंट है बच्चों के लिए मुफ्त शिक्षा प्रदान करती हैं, आपने 11 वॉल्यूम हिंदू विश्व शब्दकोश में एडिटिंग का कार्य किया है। आपका प्रिय कार्य हमेशा से यह रहा है कि आप लोगों को ध्यान व साधना सिखाती है। आपकी गीता परिवार में आने मात्र से हम लोग बहुत प्रसन्न है। आपसे निवेदन करते हैं कि आप आपके आशीर्वचन हम सबको प्रदान करें।

पूज्य भगवती सरस्वती जी ने अपने शब्दों को सबके समक्ष रखते हुए कहा परम पूज्य स्वामी जी, आशू भैया एवं संजय भैया तथा सभी गीता परिवार को मेरा प्रणाम है, उन्होंने कहा देश विदेश में भगवद्गीता लोग केवल सीख नहीं रहे, वे जी रहे हैं एवं पी रहे हैं एवं कहा स्वामी जी ने बहुत बड़ा कार्य शुरू किया है।

यह कोरोना का प्रसाद है। भगवद्गीता- ब्रह्म विद्या, योग शास्त्र है यह डिवाइन विश्व के लिए जरूरी है। यह बहुत

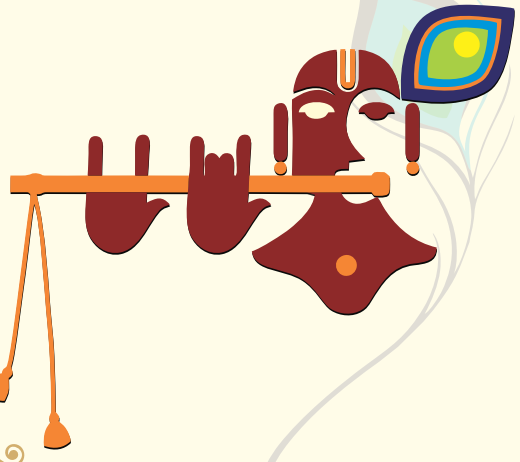


अद्भुत है। किसी भी सिटी में जाओ, किसी भी कोने में जाओ, लोग योग कर रहे हैं इस प्रकार ये संस्कृति विश्व में पहुँच गयी। यह हमारे आदरणीय प्रधानमंत्री मोदी जी का लक्ष्य है भारत की संस्कृति देश- विदेश तक पहुँचाना, हम भी यही कार्य कर रहे हैं। योग प्रयागराज से लेकर यूनाइटेड नेशन तक पहुँच चुका है।

हमारा कनेक्शन टूट गया है और यही कारण है कि यहाँ सब डिप्रेशन, टेंशन में होते हैं। इसलिये हमे भगवान के साथ कनेक्शन बनाकर चलना है। यह भक्ति हमको स्वयं से जोड़ती है एवं भगवान से जोड़ती हैं। मैं 25 साल पहले भारत आई तो परम पूज्य स्वामी जी ने मुझे भगवद्गीता दी, ऐसा लगा जैसे मुझे अपने जीवन के सभी प्रश्नों के उत्तर मिल गयें। सबसे पहले मैं जब भारत आई तो गंगा जी का दर्शन किया और उसी से मेरा जीवन बदल गया। फिर मुझे पता चला कि मुझे यहाँ रहना है। अब लगता है कि मैं भारत में नहीं बल्कि भारत माता मुझ में रहती है। मुझे आप सब से मिलकर बहुत खुशी होती है। यही भारतीय संस्कृति है। यही जीवन का सार एवं रस है। गुरु, गंगा एवं गीता के संगम ने मेरा जीवन बदल दिया।

सभी लोग आजकल टेंशन में रहते हैं भगवान कृष्ण गीता में कह रहे हैं चिंता मत करो मैं तुम्हारे साथ हूँ। हम निरंतर चिंता में रहते हैं क्योंकि हम इस शरीर में चिंता का अनुभव करते हैं। लोग अपने जीवन का अर्थ समझना चाहते हैं एवं हम जीवन में क्यों है इसका मतलब समझना चाहते हैं, इंसान कुछ ना कुछ जीवन में बनना चाहता है, पाना चाहता है परंतु भगवान हमसे यह सब नहीं चाहते हैं। भगवान हमें कहते हैं की भक्ति में लीन हो जाओ जिससे भगवान हमें जीवन में प्रसन्नता देते हैं एवं जीवन का अर्थ बताते हैं। उस परमात्मा के साथ एक हो जाना ही जीवन का अर्थ है, यही सचमुच सफलता है। मैं परम पूज्य स्वामी जी का धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ कि मुझे भारत कि संस्कृति से जोड़ा एवं गीता परिवार में आमंत्रित किया गया। आप सभी गीता यात्रा में निरंतर बने रहें तभी जीवन की चिंताएं प्रसन्नता में एवं शांतिपूर्ण जीवन में परिवर्तित होंगी। यह गीता सबके लिए है और हम इसे पूर्ण विश्व में फैल आएंगे।

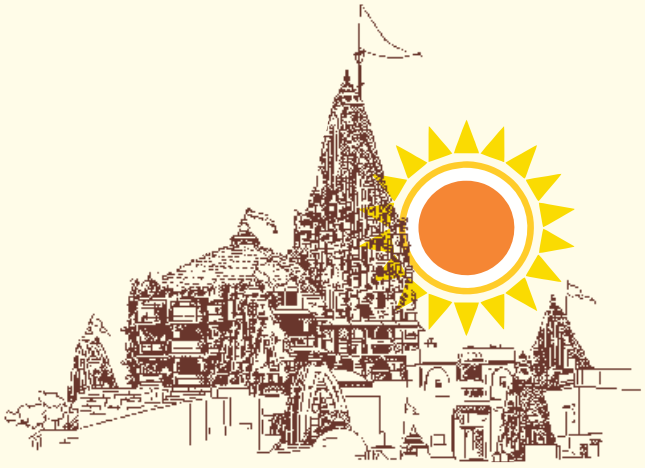
फिर आदरणीय सुवर्णा काकी जी ने अपनी मधुर वाणी में 12वें अध्याय के श्लोकों का पठन किया। इसके उपरांत ज्योति जोशी ताई ने कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापित किया। सभी को धन्यवाद देते हुए कार्यक्रम को समापन की ओर लेकर गई। सुनील धूत जी ने कार्यक्रम में समापन प्रार्थना की एवं आदरणीय संजय भैया ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया एवं कार्यक्रम के समापन की घोषणा की। इस सुंदर उद्घाटन समारोह से L1 का शुभारंभ हुआ।



विभिन्न समारोह

स्तर–4 द्वितीय बैच की पूर्णाहुति एवं चतुर्थ बैच का उद्घाटन समारोह

https://youtu.be/n4a4c4M2DNE



12 जनवरी 2022 के संक्रमण काल, विश्ववंदनीय स्वामी विवेकानंद जी के जन्मदिवस एवं मकर संक्रांति के शुभ अवसर पर गीता परिवार के एक स्तर का आरम्भ और एक स्तर के अंत का अद्भुत संयोग उत्पन्न हुआ। जहाँ पर जून लेवल 4 (द्वितीय बैच) की पूर्णाहुति तथा नवंबर लेवल 4 (चतुर्थ बैच) का शुभारम्भ हो हुआ। आदरणीय संजय भैय्या जी ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथी शारदा पीठ के परम् श्रद्धेय शंकराचार्य श्री श्री श्री विधुशेखर भारती जी को उद्बोधन हेतु आमंत्रित किया।

शारदापीठाधीश्वर विधुशेखर भारती जी ने अपनी दिव्य वाणी से सभी को सम्बोधित करते हुए कहा की मनुष्य जन्म दुर्लभं एवम श्रेष्ठ है। इसे अच्छे कामों में उपयोग लाकर सार्थक करना चाहिए। जीवन को सार्थक एवं धार्मिक जीवन जीने का मार्गदर्शन हम हमारे धर्म के मूल ग्रंथों, वेद, पुराण, स्मृति, इतिहास इत्यादि तथा गुरु के उपदेश द्वारा प्राप्त कर सकते है। किन्तु इन सद्ग्रन्थों को पढ़ना एवं समझना साधारण मनुष्य के लिए कठिन है अतः साधारण मनुष्य के कल्याण लिए भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को निम्मित रूप में रख कर गीता का उपदेश दिया। सनातन धर्मानुयायी को तो गीता का अध्ययन अवश्य ही करना चाहिए क्योंकि सनातन धर्म के मूल ग्रंथों के विषय एवं गीता के विषय एक ही हैं। अतः गीता के अध्ययन से सभी ग्रंथो का अध्ययन भी स्वतः ही हो जाता है। गीता पूरे विश्व के कल्याण के लिए लिखा गया ग्रन्थ है। जिसकी सीमा देश, भाषा, जाति, समुदाय में सीमित नहीं है, यह विश्व के प्रत्येक मनुष्य के लिए लाभप्रद है। दशमी तिथी को आयोजित पूर्णाहुति कार्यक्रम को बहुत संतोषप्रद बताते हुए स्वामी जी ने गीता परिवार के कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए सभी विद्यार्थियों एवं कार्यकर्ताओं को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। साथ ही स्वामी जी ने कामना की गीता साधकों की यह संख्या हज़ारों और लाखों से बढ़ कर करोड़ों में पहुँच जाये।

आदरणीय संजय भैया ने शंकराचार्य महाराज जी बहुत आभार प्रकट किया तत्पश्चात् आदरणीय संजय भैय्या ने हम सभी के परम् पूज्य तथा गीता परिवार के मूलाधार एवं प्रणेता स्वामी गोविन्द देव गिरिजी महाराज जी को आशीर्वचन देने के लिए निवेदन किया । पूज्य स्वामी जी ने कहा की पूर्णाहुति एवं शुभारम्भ का कार्यक्रम एक साथ होना एक संक्रमण काल जैसा ही है ठीक वैसे ही जैसे मकर संक्रांति पर होता है । इसका अपना विशेष महत्व होता है ऐसे ही महत्वपूर्ण दिवस १२ जनवरी १८६३ को मकरसंक्रांति के ही दिन स्वामी विवेकानंद जी का जन्म हुआ था। हम

सभी— गीता पढ़ना, पढ़ाना एवं जीवन में उतारना - इसी को अपने जीवन की साधना बनाकर चले हैं। सारे विश्व का वांग्मय, महापुरुषोंका जीवन जानना और उनके विचारों का अध्ययन करना- इससे बड़ा लक्ष्य हो नहीं सकता और हमारी यह साधना हमारे जीवन को आनंदमय बना देगी। हमारा जीवन आनंदमय बने व्यक्तिगतरूप से यह पर्याप्त नहीं होता है। स्वामी विवेकानंद जी भी सारा जीवन हिमालय की कंदराओं में बैठकर गुजर सकते थे किन्तु गुरु की आज्ञा को शिरोधार्य करके स्वामी जी भारत माता की सेवा के लिए चल पड़े थे। सेवा का मूल मंत्र बताते हुए स्वामी जी बताते है कि " शिव भावे जीव सेवा " जीवों की सेवा उन्हें शिव मानकर करनी चाहिए।इससे सारा जीवन ही बदल जाता है । सच्ची सेवा करनी हो तो व्यक्ति को गुरु गोविन्द सिंह जी जैसा बन कर करनी चाहिए जिन्होंने अपना सर्वस्व स्वराष्ट्र तथा स्वधर्म की बलिवेदी पर बलिदान कर दिया।

आदर्श हमेशा बहुत ही बड़े होने चाहिए तभी कुछ कार्य संभव हो पाता है । हम सभी को ऐसा यही ऊँचा लक्ष्य लेकर चलना चाहिए।

आज भारतमाता कुछ और मांग रही है। स्वामी विवेकानंद हमेशा युवाओं से यही पूछा करते थे कि "आपने आनंद मठ पढ़ा है क्या ?" पूज्य स्वामी जी ने कहा कि "यही प्रश्न मैं गीतापरिवार के विशिष्ठ कार्यकर्ताओं से करना चाहता हूँ।" हम सभी को बंकिम बाबू का उपन्यास "आनंद मठ" एक बार अवश्य ही पढ़ना चाहिए , जिसमे "वन्दे मातरम्" पहली बार छपा था। और जिसमें भारत माता बलिदान मांगती है । इस "वन्दे मातरम् " का गान करते हुए हमारा भी रोम रोम पुलकित हो जाना चाहिए।

स्वामी विवेकानंद जी ने प्रत्यक्ष राजनीति में कुछ नहीं किया किन्तु राष्ट्र के लिए युवकों को प्रेरणा देकर, उनको खड़ा करने का उन्होंने महान कार्य किया। स्वामी जी को वेद एवं इतिहास कंठस्थ थे, जिससे वे ईसाई मिशनरियों एवं विदेशी विद्वानों के भारत के प्रति कुप्रचार एवं पूर्वाग्रहों को काट देते थे।

इसी संदर्भ में स्वामीजी ने कहा कि हमें अपने जीवन एवं कार्य में अर्थ भरना है तो हमें अपने इतिहास को पढ़ना एवं जानना चाहिए । हमें अभी तक झूठा - कपोल कल्पित - नकारात्मक इतिहास पढ़ाया जा रहा है । गुरूजी गीता परिवार के प्रारंभिक दिवसों का स्मरण करते हुए बताते है कि पूर्व के दिनों में गीता परिवार द्वारा भारत का वास्तविक इतिहास पढ़ाया जाता था।



इतिहास अध्ययन के ऐसे ही एक प्रसंग में जब गुरु जी ने छात्रों के समक्ष महाराणा प्रताप के द्वारा 32 किलों के विजय की कहानी सुनाई तब उस कक्षा में उपस्थित सभी छात्रों का रोमांच और हर्ष अपने चरम पर पहुँच गया था और महाराणा प्रताप के 32वें किले के विजय की बात सुनते ही पूरा सभा सदन तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा था। जबकि उन दिनों में गीता परिवार में तालियां बजाना वर्जित था अत: इस घटना से वे स्वयं आश्चर्यचकित एवं स्तब्ध रह गए थे।

हमारा इतिहास हमें रोमहर्षकता देता है, हमें स्फूर्ति और चेतना प्रदान कर सही मार्ग दिखता है। जो अपने इतिहास को भूल जाते है वे अपना भविष्य निर्माण नहीं कर सकते। डॉ आंबेडकर जी भी कहा करते थे कि "आर्य जैसा कोई वंश नहीं होता, यह मूर्खों की बकवास है जो आर्यों को वंश बताते हैं। "

आर्य का अर्थ होता है - जिसमे सद्गुण भरे हों- “कृण्वन्तो विश्वम् आर्यम" का अर्थ होता है की सारे संसार को संस्कृति देकर सद्गुणों से भर देने वाले।

आर्य बाहर से नहीं आये थे। आर्य द्रविड़ जैसा कोई संघर्ष नहीं था। यह बात अब प्रमाणित हो चुकी है। सिकन्दर ने भारत को जीता नहीं था, बल्कि पोरस से संधि करके वह लौट गया था। सूफी लोगों ने इस देश को बर्बाद करने एवं धर्मान्तरण करने के लिए छिपे ढंग से बहुत सारा काम किया। यह बड़ी विडम्बना ही है की हम सूफी लोगों का नाम सम्मान से लेते हैं।

हमें यह सब अवश्य ही जानना चाहिए। अगर हम यह भूल गए तो कभी भी अपने सुखद और उज्जवल भविष्य का निर्माण नहीं कर पाएंगे। न भूलें, नेताजी सुभाष चंद्र बोस को ! न भूलें, उन क्रांतिकारियों को जिन्होंने भगवद्गीता को हाथों में लेकर देश के लिए हँसते- हँसते फांसी के फन्दों को चूम लिया था।

अंत में गुरु गोविन्द देव गिरि जी महाराज ने बड़े ही भावपूर्ण होकर ओजस्वी गंभीर स्वर में कहा कि "अगर अपने भीतर स्वामी विवेकानंद का निर्माण करना है, तो वेदांत पढ़ना होगा, गीता कंठस्थ करनी होगी, भारत माता से प्रेम करना होगा और हमारे वास्तविक इतिहास को जानना होगा। यह हमारे अंतर को ज्वाला से भर देगा, मस्तक को ठंडा रखकर गतिशील कार्य करने की प्रेरणा देगा। आपको अनेक कष्ट मिलेंगे किन्तु कष्ट भी प्रतीत नहीं होगा। आपका कष्ट तप बन जायेगा



और आपके इस तेजोमय तप से भारतमाता का कल्याण होगा। भारतीय जनता की सेवा होगी। जीवन सार्थक होगा। "

यह आज की घडी में हमारे लिए स्वामी विवेकानंद जी का जीवन का सन्देश है :-

एष उपदेशः

एष आदेश, एतद् अनुशासन ! भारतमाता की जय !

कार्यक्रम की रूपरेखा एवं सम्मिलित सदस्य

सूत्र-सञ्चलन :
श्रीमती कविता मानधने (पुणे, महाराष्ट्र)

आरम्भ- प्रार्थना :
श्रीमती बिनीता देसाई (लन्दन, यू.के.)

दीप-प्रज्वलन :
श्रीमती कविता तापड़िया (अहमदाबाद, गुजरात)
श्रीमती विनी माहेश्वरी (मुंबई, महाराष्ट्र)
श्रीमती पुनिता प्रसाद (चेन्नई, तमिलनाडु)

आभार ज्ञापन :
श्रीमती कल्याणी जी शेष (नागपुर, महाराष्ट्र)

समापन प्रार्थना :
सुश्री चारुशीला दांडे (शिकागो,अमेरिका)

मनोगत :
सुश्री आनंदी नीलेश भुआर्य (अमरावती, महाराष्ट्र)
श्रीमती प्राजक्ता अम्बेकर (कैलिफोर्निया, अमेरिका)
श्रीमती मधुरा पाठक (पुणे, महाराष्ट्र)
श्री अशोक शर्मा (गीताभवन, ऋषिकेश)
श्री एस. एस. राठी (आनंद, गुजरात)
श्री श्याम पांसे
श्री अंजू महरोत्रा
सुश्री सुकन्या नायर
श्रीमती बीना गोड़ा
श्रीमती भारती धुरत्कर

विभिन्न वर्गों के उदघाटन समारोहों की झलकियाँ

16th	Batch March L1 - 7/03/22	https://youtu.be/7I_tM6DrLIA
16th	Batch April L2 - 8/04/22	https://youtu.be/3KyKERuLwac
17th	Batch March L1 - 11/ 04/22	https://youtu.be/४NJNL5TMXjM
17th	Batch May L2 - 13/05/22	https://youtu.be/ipykaqsqSSQ
4th	Batch May L4 - 18/05/22	https://youtu.be/OdQhaxLH९FQ
8th	Batch May L3 - 20/05/22	https://youtu.be/Or-mC९ANB-४
8th	Batch May L3(II) - 15/06/22	https://youtu.be/Mz९fdlJgO_c
18th	Batch June L2 - 27/06/22	https://youtu.be/occ-X९xjW७४

गीता चिन्तनिका सत्र

अध्याय 7, 8, 9 – 14 जनवरी 2022

https://youtu.be/bnl0Khygfmk



पुत्रदा एकादशी के पावन पर्व पर दिनांक 13 जनवरी 2022 को श्रीमद्भगवद्गीता के अध्याय क्रमांक 7, 8, और 9 पर गीता चिन्तनिका का सत्र आयोजित किया गया था। यह सत्र गीता परिवार द्वारा आयोजित प्रति एकादशी 3 अध्यायों के क्रमश: पारायण व चिंतन शृंखला का एक भाग था।

गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. संजय मालपाणी जी ने इस अवसर पर अपनी ओजस्वी वाणी में सभी को गीता संदेश दिया तथा गीता चिन्तनिका सत्र के महत्व के बारे में अपने विचार प्रकट किये। इस समय आ.संजय भैया ने गीता संथा के चारों सोपान पूर्ण करके गीता जी को अपने जीवन में उतारने के लिए कटिबद्ध हुए, उन सभी साधकों की सराहना की जो निरंतर रूप से गीता चिन्तनिका सत्र में सेवा देते हैं तथा इन सत्र में नियमित रूप से भाग लेते हैं।

इस विषय का विस्तार करते हुए आ. संजय भैया ने कहा कि, 'गीता जी को हम जितनी बार पढ़ेंगे, जितनी बार हम उस पर मनन व चिंतन करेंगे, उतनी बार हमें नवीन सीख मिलेगी। एकादशी न केवल एक पावन पर्व है परंतु वह भगवान श्रीकृष्ण की प्रिय तिथि भी है। यही कारण है कि एकादशी को गीता जी का चिंतन करना अत्यंत लाभदायक है।' छठे अध्याय में भगवान द्वारा किये गये मार्गदर्शन का आधार लेते हुए संजय भैया ने अत्यंत सुंदर रीति से चंचल मन को अभ्यास के द्वारा कैसे स्थिर किया जा सकता है यह स्पष्ट किया एवं प्रत्येक एकादशी को गीता चिन्तनिका के माध्यम से गीता के क्रमशः अध्यायों का सामूहिक पठन किस प्रकार से अभ्यास का एक उत्तम उदाहरण है, इसका महत्व प्रकट किया। प्रत्येक गीता चिन्तनिका सत्र में नवीन साधक चिन्तनिका एवं परिपाठ के लिये आते है, इस वैशिष्ट्य को सराहते हुए संजय भैया ने कहा कि गीता एक माता की भाँति इन सभी नवीन साधकों को उनकी प्रकृति एवं अभ्यास के अनुरूप प्रसाद देती है।

भगवान द्वारा सातवें अध्याय में दिये गये मार्गदर्शन की चर्चा करते हुए संजय भैया ने अत्यंत सरल किंतु प्रभावी पद्धति से यह समझाया कि यदि हमें अपने जीवन में तेजस्वी बनना है तो उसके लिये भगवान का सान्निध्य बहुत आवश्यक है। यह तेज प्राप्त करने के लिये एवं इस हेतु हमें सतत परमेश्वर का मनन चिंतन करके हमारे अंतर में स्थित ईश्वर को सदैव जागृत रखना है।

भगवान द्वारा आठवें अध्याय में दिये गये, 'यदि मुझे प्राप्त करना चाहते हो तो प्रति क्षण मेरा स्मरण करो' - इस संदेश का विस्तार करते हुए संजय भैया ने बताया कि हमें अपना विवेक हर क्षण जागरूक रखना है। यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि हमारा मन और हमारी

बुद्धि तभी एक साथ रहते हैं जब हमारा विवेक जागरूक रहता है। विवेक के जागरूक होने के कारण हम भगवान का स्मरण करते हैं और जिस क्षण हम हमारे विवेक को जागृत करते हैं उसी क्षण हम तेजस्वी बन जाते है।

नौवें अध्याय में भगवान द्वारा दिये हुए शिक्षा का विवेचन करते हुए संजय भैया ने कहा कि भगवान तो केवल स्नेह एवं प्रेम चाहते है। प्रेम से दिए गए पत्र, पुष्प, फल इतना ही नहीं तो केवल अल्प सा जल भी भगवान को प्रिय होता है। **"भगवान भक्त की भावना, उसका प्रेम इस से प्रसन्न होते है"** यह महत्वपूर्ण सूत्र इस समय संजय भैया ने सब को विस्तार के साथ समझाया। अपने वक्तव्य का समापन करते हुए संजय भैया ने इस गीता चिन्तनिका सत्र के लिए सब को शुभकामनाएं दी।

इसके उपरांत सातवें अध्याय का पठन गीताव्रती श्रीमती मंगला अशोक नगरकर द्वारा किया गया। उनके बाद गीताव्रती श्रीमती अंजली लाहोटी जी ने आठवें अध्याय का तथा गीताव्रती श्रीमती शांता भुतडा जी ने नौवें अध्याय का मनभावन अनुपठन किया।

तीनों अध्यायों के अनुपठन के पश्चात इन तीनों अध्यायों का चिंतन प्रारंभ हुआ।

गीताव्रती श्रीमती संगीता गर्गे जी ने सातवें अध्याय का चिंतन सादर किया। उन्होंने बताया की सातवें अध्याय के प्रथम श्लोक के विषय में गीता परिवार के संस्थापक अध्यक्ष प.पू. स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरि जी महाराज ने कहा है कि इस एक अध्याय का मनन चिंतन करना पूर्ण गीता के अभ्यास करने के समान है। **ईश्वर को निरंतर स्मरण करते रहना यह मानव द्वारा किया जाने वाला सर्वोच्च पुरुषार्थ है।** परमात्मा को अपना सर्वस्व अर्पण करनेवाले साधक ही परमेश्वर को तत्वतः जान सकते हैं। सातवें अध्याय का विषय ज्ञान विज्ञान योग है तथा इसमें भगवान द्वारा अर्जुन को सृष्टि निर्माण का समग्र ज्ञान प्रदान किया गया है। परमात्मा का ज्ञान ही संपूर्ण ज्ञान तथा परम सत्य है। सत्व, रज तथा तम इन तीनों गुणों के नियंता होने के उपरांत भी परमात्मा इन तीनों गुणों से परे होते हैं। जिस क्षण साधक निष्काम भक्ति करने लगता है उसी क्षण वह परम प्राप्ति की ओर अग्रसर हो जाता है। अध्यात्म का गूढ़ अर्थ स्वयं को जानना होता है।



अक्षर ब्रह्म योग पर आधारित आठवें अध्याय का चिंतन गीताव्रती सुरेश गांधी जी ने प्रस्तुत किया। आठवें अध्याय में अर्जुन के सात प्रश्नों के उत्तर देते हुए भगवान ने इस अध्याय में बताते है कि परम अक्षर का नाम 'ब्रह्म' है, 'अध्यात्म' शब्द आत्मा का वाचक है, चराचर के स्वरूप प्रकट करने के क्रिया को 'कर्म' कहते है। इसके आगे भगवान कहते की पंचमहाभूतों से बनी एवं सतत परिवर्तनशील नश्वर सृष्टि को 'अधिभूत' कहते है। ब्रह्माजी 'अधिदेव' है। सभी भूतों की अंतरात्मा के रूप में विराजमान परमात्मा को 'अधियज्ञ' कहते है। मानव अपने अंतकाल में जिस स्वरूप का स्मरण करता है, ध्यान करता है वही स्वरूप उसे प्राप्त होता है, इसी कारण हमें सतत भगवान का

स्मरण करते रहना चाहिए। क्योंकि यदि मानव अंत काल में भगवान का स्मरण करता है तो निश्चित ही वह परम स्वरूप को प्राप्त करता है। जो आत्मा परमेश्वर को प्राप्त करता है वह जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाता है। भगवान ने यहाँ यह भी स्पष्ट किया है कि उन्हें भक्ति के माध्यम से सरलता से प्राप्त किया जा सकता है

नौवें अध्याय में भगवान ने राज विद्या राजयोग के बारे में विस्तार से बताया है। इसका सार रूप चिंतन गीताव्रती श्रीमती सुरेखा जी मनियार ने प्रस्तुत किया। जिस विद्या को जानने के पश्चात कुछ जानना शेष नहीं रहता उस विद्या को 'राज विद्या' कहते हैं तथा विश्व के सभी बातों में जो बात सबसे गुह्य है उसे 'राज गुह्य' कहा जाता है। भगवान की अनंत शक्तियां प्रकृति के द्वारा प्रकट होती है। भगवान विश्व के सभी चराचर में व्याप्त हैं और सभी चराचर भगवान का अंश है। तथापि इसके उपरांत भी भगवान किसी भी जीव से लिप्त नहीं है। इसके विपरीत जीवात्मा सांसारिक मोह माया में लिप्त होता है और इसी कारण वह जन्म-मृत्यु के चक्र से छुटकारा नहीं पा सकता। यदि जन्म मृत्यु के चक्र से छुटकारा प्राप्त करना है तो भगवान को जानना, उनको समझना तथा उनकी नवधा भक्ति आवश्यक है।

गीता परिवार के दक्षिणांचल के प्रभारी तथा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री हरिनारायण व्यास जी तथा गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्रीमती निर्मला मारू काकी जी के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम का नियोजन एडवोकेट श्रीमती कविता मानधने जी द्वारा किया गया था।

श्रीमती उपासना झंझोटे जी ने इस कार्यक्रम का सूत्र संचालन किया तथा गीताव्रती श्रीमती कीर्ति सुहसरिया जी ने प्रारंभिक प्रार्थना प्रस्तुत की । पुणे की साधक श्रीमती सोनाली काला जी ने सुंदर दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम आरंभ किया।

कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन श्रीमती निर्मला मारु काकी जी ने किया तथा समापन गीताव्रती कु. दक्षिता अग्रवाल द्वारा समापन प्रार्थना के साथ हुआ।



गीता चिन्तनिका सत्र

द्वितीय पारायण – 27 फरवरी 2022



फरवरी 2022 फाल्गुन मास कृष्ण पक्ष की विजया एकादशी एवं त्रिस्पर्शा एकादशी के पावन तथा अनूठे संयोग के शुभ अवसर पर गीता चिंतनिका के द्वितीय सत्र के पठन एवं चिंतन में महाराष्ट्र से अनुजा भट्टड़ दीदी ने परम पूज्य गुरुदेव श्री गोविंददेव गिरी जी महाराज की सूक्ष्म उपस्थिति में सभी गीता साधकों और गीता रसिकों का स्वागत किया।

गुरु स्वरूपिणी, मुक्तिदायिनी, मोक्षदायिनी, परम पुनीता, भक्तिदायिनी, शक्तिदायिनी, मातृ रूपिणी भगवद्गीता के श्रवण, पठन, पारायण एवं चिंतन का शुभ अवसर प्राप्त हुआ है।

आत्मा की हार्दिक भावना का नाम है प्रार्थना। दिल के भीतर भरी आग का नाम है प्रार्थना। सत्र का शुभारंभ प्रार्थना से किया गया।

अत्यंत अल्प आयु में ही बाल गीताव्रती बनी बिटिया दिव्या करवा जो 2020 से गीता परिवार से जुड़ी हुई हैं , , के द्वारा मनमोहक एवं मधुर वाणी में प्रार्थना की गयी।

कार्यक्रम की अगली कड़ी में मन का तिमिर हरण करने , ज्ञानाग्नि से कर्म को भस्म करने, ज्ञान का दीप आलोकित करने हेतु गीताव्रती श्री अमोल काबरा जी और उनके परिवार को आमंत्रित किया गया। रोचक एवं श्रेष्ठ बात यह है कि अमोल जी का **पूरा परिवार गीताव्रती** है । पत्नी श्रीमती नेहा काबरा जी गीता परिवार में ट्रेनर हैं और पुत्र तनय काबरा जी 9 वर्ष की अत्यंत अल्प आयु में ही गीतव्रती हो गए हैं। अमोल काबरा जी सितंबर 2020 से गीता परिवार से जुड़े हैं तथा गीता संथा वर्ग में ट्रेनर, टेक, ग्रुप कोऑर्डिनेटर इत्यादि कई भूमिकायें निभा रहे हैं।

परिवार के सभी सदस्यों के द्वारा घर के बहुत ही सुंदर मंदिर में आरती का आयोजन किया गया।

हम सबके लिए अत्यंत हर्ष का विषय है कि गीता परिवार सफलता की एक और पायदान पर चढ़ने जा रहा है । आज एक विशेष कार्यक्रम होने जा रहा है पाठकों की सुविधा हेतु नई वेबसाइट का लॉन्च होने जा रहा है । अत्यंत कर्मठ कार्यकर्ता, बहुत सारी टीमों को संभालने वाले, सभी का मार्गदर्शन करने वाले, सभी के प्रिय श्री संतोष भैया ने नई वेबसाइट की लॉन्चिंग की प्रक्रिया में बताया कि गीता परिवार के द्वारा सभी की सुविधा हेतु vivechan.learngeeta.com इस नई वेबसाइट का निर्माण किया गया। सभी साधकों की यह इच्छा रहती है कि पुराने विवेचन भी किसी भी पुन: पुन: सुन सकें।

अत: इस नई वेबसाइट पर सभी साप्ताहिक विवेचन

उपलब्ध हैं। सूची में सबसे ऊपर नवीनतम विवेचन होते हैं। लिंक या गीता की इमेज पर क्लिक करने से विवेचन सुन और देख सकते हैं। अध्यायों की सूची दी गयी है, जिस अध्याय का विवेचन सुनना हो उसका चयन करने पर उस अध्याय के विवेचन को सुना जा सकता है। अध्याय, अध्याय का कोई पार्ट, विवेचक, दिनांक, भाषा एवं टाइटल के आधार पर चयन करने की सुविधा इस वेबसाइट पर उपलब्ध है। पिछले 10, 25, 50 या 100 विवेचन आपको स्क्रीन पर देखने का ऑप्शन है। अंग्रेजी, हिंदी दोनों माध्यम के विवेचन इस वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। विवेचन के अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषाओं में पीडीएफ(PDF) भी उपलब्ध हैं। इसप्रकार से संतोष भैया ने वेबसाइट के बारे में विस्तार से समझाया। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सभी को इस वेबसाइट से बहुत लाभ होगा।



इसके पश्चात अध्याय 13, 14 एवं 15 के शुद्ध पठन हेतु क्रमशः गीताव्रतियों को सादर आमंत्रित किया गया।

अध्याय 13 के पठन के लिए महाराष्ट्र से गीताव्रती श्री कपिल सावांरकर जी को आमंत्रित किया गया, जिन्होंने बहुत ही सुंदर पठन किया।

इसके पश्चात विट्ठल भगवान की पावन नगरी पंढरपुर महाराष्ट्र से गीताव्रती श्री सुधीर जी जो कि मार्च 2021 से गीता परिवार से जुड़े हैं, आप ट्रेनर भी हैं,ज्येष्ठ साधक भी हैं, आपने अध्याय 14 का पठन किया।

अध्याय 15 के पठन के लिए अनुराधा करवा दीदी को आमंत्रित किया गया जो सितंबर 2022 से गीता परिवार से जुड़ी हैं और गीता परिवार में कई तरह की सेवायें दे रही हैं।

इसके पश्चात अनुजा भट्टड़ दीदी ने तीनों गीताव्रती गीता साधकों को सुंदर तथा सुस्पष्ट गीता पठन के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

सर्वप्रथम अध्याय 13 के विवेचन के लिए भोपाल से गीताव्रती डॉ. अपर्णा जी, जो कि फरवरी 2021 से गीता परिवार से जुड़ी हुई हैं और अनेक प्रकार की सेवाएँ गीता परिवार को प्रदान कर रही हैं।

अध्याय 13 क्षेत्र क्षेत्रज्ञविभागयोग में भगवान ने सगुण साकार की उपासना का विस्तार से वर्णन किया। इस अध्याय को समझने से सम्पूर्ण धर्मशास्त्र समझ में आता है। यह एक अनुभूति का अध्याय है, जीवन से दुःख को मिटाने के लिए इस अध्याय का अध्ययन, मनन, चिंतन करना चाहिये। यह अध्याय ज्ञानयोग से परिपूर्ण तथा सम्पन्न है।



शरीर क्षेत्र के नाम से पुकारा गया है शरीर को जो जानता है वह क्षेत्रज्ञ है।



प्रकृति, पुरुष, परमात्मा तथा पुरुषोत्तम के संयोग से हमारा शरीर बना

हमारे अंदर भगवान का अंश है। दुःख देह जन्य होता है। आनंद में दुःखों की अनुभूति नहीं होती है। इस जीवन में अच्छे कर्म किये गए तो अच्छा जन्म प्राप्त होता है।शरीर प्रकृति से प्राप्त है, आत्मा उस पुरुष से प्राप्त है। दोनों के संयोग से हम इस जीवन में आये हैं। किसी भी प्राणी को किसी भी प्रकार से नहीं सताना चाहिये।

ज्ञानचक्षु से क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के भेद को देखने वाला परमात्मा को प्राप्त होता है। अंत में अनुजा भट्टड़ दीदी अपर्णा दीदी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

चौदहवें अध्याय के विवेचन के लिए कोटा राजस्थान से गीताव्रती मनीषा गांधी जी, जो 2021 से गीता परिवार से जुड़ी हैं और गायन एवं लेखन में विशेष रुचि रखती हैं को आमंत्रित किया गया।

इस अध्याय में भगवान कहते हैं कि बंधन दो प्रकार से होता है प्रकृति से और प्रकृति के कार्य गुणों से। प्रकृति के बंधन से छूटने के लिए भगवान ने 13वें अध्याय में बता दिया था। प्रकृति के कार्य गुणों के बंधन से छूटने के लिए भगवान ने इस अध्याय में बताया कि उत्तम और श्रेष्ठ ज्ञान को जानकर बड़े बड़े मुनियों ने संसार से मुक्ति प्राप्त की है और परमात्मा को प्राप्त हुए हैं। इस ज्ञान का आश्रय करके परमात्मा से साधर्मता को प्राप्त होकर महासर्ग में पैदा नहीं होते और महाप्रलय में व्याकुल नहीं होते हैं क्योंकि उनकी दृष्टि में मुझ वासुदेव से भिन्न कोई वस्तु है ही नहीं, परमात्मा के सिवाय संसार में इस से बढ़कर कोई व्यापक तत्व नहीं है। मूल प्रकृति को यहाँ महद्ब्रह्म कहा गया है।

भगवान कहते हैं कि हे अर्जुन! सत्व, रज और तमोगुण, ये प्रकृति से उत्पन्न हुए तीनों गुण अविनाशी जीवात्मा को शरीर में बाँधते हैं। सत्वगुण से सुख और ज्ञान होने पर साधक को यह सावधानी रखनी चाहिये कि ये सुख और ज्ञान मेरे लक्ष्य और भाग्य नहीं है। ये तो लक्ष्य की प्राप्ति के कारण हैं।

रजोगुण तृष्णा और आसक्ति पैदा करते हैं जिससे जीवात्मा बँधता है।

तमोगुण अज्ञान से उत्पन्न होता है जो प्रमाद ,आलस्य और निद्रा के द्वारा देह के साथ संबंध मानने वालों को बाँधता है।



मृत्यु के समय सत्व गुण अधिक हों तो वह निर्मल लोक में, रजोगुण अधिक हों तो मनुष्य योनि में और तमोगुण अधिक होने पर मूढ़ योनि में जन्म लेता है। सत्व कर्म का फल शुभ निर्मल, रजो कर्म का फल दुःख और तमोगुण का फल अज्ञान कहा गया है।

जो मनुष्य सुख-दुःख में सम, मिट्टी के ढ़ेले और सोने में सम, निंदा स्तुति में सम, मान अपमान मैं सम और मित्र शत्रु के पक्ष में सम रहता है उसे गुणातीत कहा गया है।

भगवान की सगुण उपासना करने से ज्ञान योग, कर्मयोग और ध्यानयोग तीनों सिद्ध हो जाते हैं। भगवान कहते हैं कि शाश्वत धर्म का और एकांतिक सुख का आश्रय मैं ही हूँ।

15वें अध्याय के विवेचन के लिए मुम्बई से श्री द्वारका प्रसाद जी गग्गढ़ को आमंत्रित किया गया।

उन्होंने बताया कि गीता में जीवन के सिद्धांत जो अब तक बताए हैं उनकी पूर्णता अध्याय 15 से होती है।

इस अध्याय में समस्त वेदों का सार है, इसलिये इस अध्याय को पुरुषोत्तम योग नाम से जाना जाता है। इस अध्याय में संसार को विशाल वृक्ष बताया गया है जिसमें ऊपर की ओर मूल जो ईश्वरीय ऊर्जा से पोषित हैं तथा नीचे की ओर त्रिगुणों से पोषित इसकी अनंत शाखाएं हैं।

एक संसार रूपी वृक्ष अविनाशी है और दूसरा इससे भी परे परम अविनाशी है। वेद इस अविनाशी संसार रूपी वृक्ष के पत्ते कहे गए हैं। जिसने इस संसार रूपी वृक्ष को जान लिया, समझो उसने वेद को जान लिया है। इस संसार रूप अश्वत्थ वृक्ष को दृढ़ असंगत रूप शस्त्र के द्वारा काटकर ही परम पद परमेश्वर को खोज पाएंगे।

समर्पण से जिनकी मोह ममता नष्ट हो गई है, जो कामना से रहित हो गए हैं। जो सुख दुःख आदि द्वंद्वों से मुक्त हो गए हैं ऐसे साधक अविनाशी परम पद को प्राप्त होते हैं। ऐसी अवस्था आने पर ही संसार रूपी वृक्ष कटता है और वह लौटकर संसार में नहीं आते हैं वही मेरा परमधाम है। इस संसार में जीव मेरा ही अंश है वह प्रकृति में स्थित मन और पांचों इंद्रियों को आकर्षित करता है। जिस प्रकार वायु गंध के स्थान से गंध को ले जाती है उसी प्रकार जीवात्मा भी जिस शरीर को छोड़कर जाता है वहाँ से मन और पाँचों इंद्रियों के साथ अपने शरीर में स्थित होकर यह जीवात्मा आँख, कान, नाक त्वचा, जिव्हा और मन का आश्रय लेकर विषयों का सेवन करता रहता है।



भगवान कहते हैं कि मैं क्षर से अतीत हूँ और अक्षर से भी उत्तम हूँ, इसलिए पुरुषोत्तम नाम से प्रसिद्ध हूँ। जो मोहरहित मनुष्य मुझे पुरूषोत्तम जानता है वह सब प्रकार से मेरा ही भजन करता है।

इसके पश्चात अनुजा दीदी ने सभी के धन्यवाद ज्ञापन के लिए बीकानेर, राजस्थान से श्री सुरेश व्यास भैया जो आरंभ से ही गीता परिवार से जुड़े हुए हैं, उन्हें आमंत्रित किया। विगत कई वर्षों से प्रमुख तकनीकी सहायक के रूप में हर टीम से जुड़े हुए हैं। श्री सुरेश व्यास भैया ने परमपिता परमेश्वर एवं पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज की सूक्ष्म उपस्थिति में तथा राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री संजय भैया और उपाध्यक्ष श्री आशू भैया जिनके मन मस्तिष्क में यह जुनून सवार है कि विश्व के कोने-कोने में श्रीमद्भगवद्गीता को पहुँचाया जाए आपकी उपस्थिति से ही गीता परिवार बहुत आगे बढ़ पाया है, धन्यवाद दिया।

उन्होंने हरिनारायण जी व्यास, निर्मला जी , कविता मानधने जी का भी धन्यवाद ज्ञापित किया। गीताव्रती श्री कपिल जी, श्री सुधीर जी, श्री अनुराधा जी जिन्होंने क्रमशः अध्याय 13, 14 एवं 15 का गीता परायण बहुत ही स्पष्ट शब्दों में किया उन्हें भी धन्यवाद ज्ञापित किया।

गीता विवेचन के लिए अध्याय 13, 14 एवं 15 के लिए क्रमशः अपर्णा जी मनीषा जी एवं श्री द्वारका प्रसाद जी गग्गढ़ का भी धन्यवाद ज्ञापित किया गया इन्होंने बहुत ही सुंदर विवेचन तीनों अध्यायों का किया।

समापन प्रार्थना हेतु कोलकाता से स्वाति बजाज दीदी जो अक्टूबर 2020 से गीता परिवार से जुड़ी हुई है उनको भी अग्रिम धन्यवाद दिया गया कृष्णरूपी साधकों का भी धन्यवाद जिन्होंने विवेचन को बहुत ही ढंग से सुना और आशा है कि वे इसे जीवन में लाएंगे और सभी तकनीकी सहायकों का जो पर्दे के पीछे रहकर काम करते हैं और उनके बिना यह विवेचन सत्र नामुमकिन था उन्हें भी बहुत-बहुत धन्यवाद दिया।

गीता जी हमारे मन के आंतरिक युद्ध में विजयी होने के लिए तैयार करती हैं और हमें आत्मानुशासन आत्मउन्नति का सोपान बद्ध उपाय बताती हैं। इस प्रकार से 13, 14 एवं 15वें अध्याय के चिंतनिका सत्र का समापन हुआ।

अन्य गीता चिन्तनिका सत्रों की सूची जिनमे साधकों के द्वारा श्लोक उच्चारण एवं चिंतन किया गया -

गीता चिन्तनिका सत्र	- 16,17,18वाँ	-14/03/22	https://youtu.be/CY_fZMOBFp8
गीता चिन्तनिका सत्र	- 1, 2, 3वाँ अध्याय	- 28/03/22	https://youtu.be/8GVbtY2LtL0
गीता चिन्तनिका सत्र	- 4, 5, 6वाँ अध्याय	- 13/04/22	https://youtu.be/rL8G8Ms1N3I
गीता चिन्तनिका सत्र	- 7, 8, 9वाँ अध्याय	- 27/04/22	https://youtu.be/OHr4s08PT_4
गीता चिन्तनिका सत्र	- 10, 11, 12वाँ अध्याय	- 12/05/22	https://youtu.be/CQOwrJeOsEE
गीता चिन्तनिका सत्र	- 13, 14, 15वाँ अध्याय	- 26/05/22	https://youtu.be/QavMZAF3dgs
गीता चिन्तनिका सत्र	- 16, 17, 18वाँ अध्याय	- 11/06/22	https://youtu.be/HJnUb1y9-e4

गीता भक्ति दिवस

https://youtu.be/lzonfm1wugQ



गीता परिवार के संथापक अध्यक्ष प. पू. स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी महाराज के **73वें** जन्मदिन के उपलक्ष्य मे गीता परीवार द्वारा पौष कृष्ण, षट्तिला एकदशी के पावनपर्व पर दि. **28 जनवरी, 2022** को **'गीता भक्ति दिवस'** उत्साह तथा भक्तिभाव के साथ मनाया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ मे गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. संजय जी मालपाणी ने कार्यक्रम की भूमिका स्पष्ट करते हुये सबको विदित किया की कार्यकर्तांओं तथा साधकों के आग्रह के पश्चात भी प.पू. स्वामीजी उनके जन्मदिन को मनाने के पक्ष मे नही रहते हैं। इसलिये हम सब लोग प. पू. स्वामीजी के जन्मदिन को 'गीता भक्ति दिवस' के रुप मे मनाने लगे हैं। दो वर्ष पुर्ण इसी श्रृंखला की एक कडी के रुप मे 'गीता महोत्सव' मनाया गया जिसमे पैंतिस हजार बालकोंने प. पू. स्वामीजी के **70**वें जन्मदिन के उपलक्ष्य मे **70** हजार गीता अध्याय पठण कर अर्पण किये थे। उस के उपरांत इस वैश्विक महामारी के चलते गीता परिवार भी ऑनलाइन संथा के माध्यम से विश्वभर मे विस्तारित हो गया है। आज के इस 'गीता भक्ति दिवस' को 125 देशोंसे एकत्रित हुए शिष्यगण इस कार्यक्रम के माध्यम से मना रहे हैं।

आरंभ की प्रार्थना के पश्चात विश्वभर के 73 देशों से अनेक साधकों ने एक साथ दीप प्रज्ज्वलित कर प. पू. स्वामीजी के प्रणाम अर्पित किया। इस दीप पप्रज्ज्वलन की पार्श्वभूमि पर चल रहे गीता परिवार बाल-वृंद तुल्सिका दीदी के प्राक्कथन के नेपथ्य में श्रीमती विजया गोडबोले ताई द्वारे गाये हुए गीत ने वातावरण अतिमधुर एवं अर्थपूर्ण कर दिया।

इस उपरांत वेदश्री तपोवन स्थित 71 वैदिक छात्रों ने वेदमंत्रो के शक्तीपूरित शास्त्रीय पद्धति से पठन द्वारा प.पू.स्वामीजी का अभिष्टचिंतन किया।

गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ.आशू जी गोयल ने स्वागत भाषण करते हुए बताया की विगत दो वर्षों मे 'लर्नगीता प्रकल्प' के माध्यम से विश्वभर के **123** देशोंसे **3.5** लाख से अधिक साधक प्रतिदिन **1** हजार से अधिक ज़ूम कक्षाओं के माध्यम से ऑनलाइन गीता संथा से जुडे हैं। इस समय आशू भैया ने देश-विदेश से



इस 'लर्नगीता' कार्यक्रम मे सेवा दे रहे सभी सेवाकर्ताओं को “गीता पढ़ें, पढ़ा और जीवन में लाए” इस संदेश का पुनः स्मरण कराया।

इसके पश्चात गीता परिवार के परभणी के साधकों ने 1 6 वें अध्याय पर आधारित एक अत्यंत सुंदर, मनभावन, सामुहिक शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुत किया। नृत्य के माध्यम से इन सेवाकर्ताओं ने दैवी एवं आसुरी गुणों सुंदर चित्रण सादर किया।

'गीता न केवल भक्ति का महत्व वर्णित करती है वरन् शक्ती का महत्त्व भी बताती है', यह संदेश लेकर श्रीमती प्रमिला देवी माहेश्वरी जी, उपाध्यक्ष, गीता परिवार के नेतृत्व मे गीता परिवार का एक अंग 'अर्जुन युवा मंच' के युवा एवं युवतियों ने इसके पश्चात् अपने शस्त्र विद्या के कौशल्य का परिचय देते हुए तलवार बाजी से **73 निंबुओं** का **लक्ष्यवेध** किया।

वीरतापूर्ण अद्भुत प्रदर्शन के पश्चात् समय था, गीता संथा वर्ग में जो सिखाया जाता है उसका एक प्रातिनिधिक स्वरूप में एक छोटा सा प्रात्यक्षिक देखने का ! **6 वर्ष** के बालक **रेवांश** से लेकर **79 वर्ष** के आयु के **गोखले काका** तक गीता संथा वर्ग से शिक्षा प्राप्त कर गीता के सभी **18** अध्यायों को कंठस्थ करने वाले इन साधकों ने अपने कंठस्थीकरण की छोटी सी परीक्षा सबके सामने प्रस्तुत की। किसी भी श्लोक की पहले पंक्ति का प्रारंभ कर देने पर उन्होंने बिना देखे, बिना समय गवाएं, तुरंत वह श्लोक और उसके आगे का श्लोक गा कर सबको प्रभावित कर दिया।

गीता में वर्णित सौ सद्गुणों को एक माला में पिरो कर उन्हें इसके बाद एक सुंदर गीत के माध्यम से प्रस्तुत किया गया।

आ. श्री संजय भैया ने कार्यक्रम को आगे बढाते हुए, इस कार्यक्रम के **प्रमुख अतिथि डॉक्टर जयदीप जी आर्य,** मुख्य केंद्रीय प्रभारी, पतंजलि योगपीठ का परिचय दिया।

जयदीप जी आर्य ने इस समय अपने विचार व्यक्त करते हुए प. पू. स्वामीजी के समक्ष इस पावन पर्व पर अतिथि के रुप मे सम्मिलित कराने के लिये अपनी कृतज्ञता प्रकट की। उन्होने कहा कि गीता परिवार तथा पतंजलि योग पीठ एक ही लक्ष्य की ओर अग्रसर है। गीता के **'यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।** इस श्लोक का संदर्भ देते हुए डॉ.आर्य ने कहा कि, जहाँ इस प्रकार गीता प्रचार-प्रसार



के लिए समर्पित कार्य होता हो वहाँ विशाल शक्ति का अर्जन होना निश्चित है। विश्व के तथा भारत के सभी तत्ववेत्ता तथा महान ऋषि मुनियों ने गीता के महत्व का निरंतर वर्णन किया है। गीता परिवार द्वारा आयोजित इस स्वाध्याय तथा तप रूपी यज्ञ को अनेक

शुभकामनाएं देते हुए डॉ.आर्य ने अपने वचनों को विराम दिया।

डॉ. आर्य जी के संबोधन के पश्चात डॉ. संजय भैया ने प्रस्तावित किया कि अगले वर्ष प. पू. स्वामीजी के 74वें जन्मदिवस के अवसर पर गीता परिवार 740 गीताव्रतीयों के साथ पतजंलि योग पीठ पधारेंगे और वहाँ गीता भक्ति दिवस मनायेंगे।



आगे बढते हुए कार्यक्रम मे गीता परिवार के सक्रिय सदस्य श्री सत्यनारायणजी मुंदडा द्वारा संकलित **"शॉर्ट नोट्स इन इंग्लिश फॉर संस्कार पाथेय"** इस पुस्तक का विमोचन प. पू. स्वामीजी के करकमलों द्वारा किया गया। इस पुस्तक समेत गीता परिवार के ई न्युज लेटर **'गीता मैत्री'** के नवंबर एवं दिसंबर माह के अंक का भी प. पू. स्वामीजी द्वारा विमोचन किया गया।

इसके पश्चात प. पू. स्वामीजी ने अपने आशीर्वचन से सबको संबोधित किया। प्रारंभ मे ही प. पू. स्वामीजी ने विश्व के 73 विभिन्न देशों से किए गए दीप प्रज्वलन की प्रशंसा कर सभी सेवाकर्ताओं के उत्साह को द्विगुणित किया। सद्गुणों के गीत के संबंध में स्वामी जी ने कहा कि "इस गीत के लिए सबको गीता का चिंतन एवं मंथन करना पड़ा। श्रीमद्भगवद्गीता गुणों का सागर है, अनेक रत्न उस में छुपे हुए हैं और आप लोगों ने मंथन कर इस सागर से रत्नों को निकाल लाया और गीतों में पिरो दिया। " इस कृति में छिपे हुए रहस्य का उद्घाटन करते हुए परम पूज्य स्वामी जी ने कहा, "जब हम गीता जी के सान्निध्य में आते हैं, तो हमारा जीवन सुगंधित हो जाता है, जीवन अलौकिक होता जाता है। हमारे चिंतन की धारा बदलती है, हमारा जीवन अमूल्य होता जाता है। प. पू. स्वामी जी ने आगे कहा कि शिष्यगण जिन सद्गुणों को उनमे देखते हैं वह सद्गुण यदि उनमें होंगे तो वे सब सद्गुण श्रीमद्भगवद्गीता के मनन, चिंतन एवं भगवद्गीता के प्रति उनके प्रेम का ही परिणाम है। **'निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्'** इस भगवद्गीता के चरण का उल्लेख करते हुए हुए प. पू. स्वामी जी ने एक दिव्य संदेश देते हुए कहा कि 'भगवद्गीता का प्रचार एवं प्रसार होना ही है, योग का प्रचार एवं प्रसार होना ही है। भारत माता अब जाग उठी है, हमारे देश का भविष्य बदल रहा है। हम लोग एक पुनरुत्थान के युग में आ पहुँचें हैं। हम इसमें अपना योगदान दे या ना दे, यह सब विधि लिखित होकर ही रहेगा। अतएव हम यदि इस सेवा के माध्यम से इस विशाल कार्य में जुड़ जाते हैं तो इस महान परिवर्तन का, इस महान प्रगति का, कुछ तो श्रेय हमें भी प्राप्त होगा। यदि हम अपने अहंकार के कारण अपने आप को इस महान कार्य से जुड़ने से रोकते हैं, तो उससे इस कार्य की या देश के प्रगती की कोई हानि नहीं होने वाली

है। अपितु हम अपने आप को इस महायज्ञ से दूर रख कर अपनी स्वयं की क्षति करेंगे। यह जगन्नाथ का रथ है और जो चलने ही वाला है। देश के भाग्य ने करवट बदल ली है, देश का पुरुषार्थ जग चुका है। सभी दृश्यों से देश का यह जागरण विलोकनीय लगता है। इसके कारण जो आनंद प्राप्त होता है, उस आनंद के साथ हमें इस कार्य में संलग्न होना चाहिए। हमें भगवद्गीता का कार्य, इस देश के सेवा का कार्य, देश की आगे की पीढ़ी को सक्षम बनाने का काम है। यह एक श्रेष्ठ कार्य है। समाज को अगर बदलना है, परिवर्तित करना है, तो परिवर्तन केवल नियमों से और विधि से नहीं होता है। उसके लिए



समाज को अंतरंग से बदलना चाहिए। अंतरंग से परिवर्तित समाज एक तेजस्वी समाज होता है। मैं देश के कुछ ऐसे संगठनों को जानता हूँ जिनके समर्पित कार्यकर्ताओं ने देश के उत्थान के लिए अपना सर्वस्व अर्पण किया है। इसी कारण हमारा देश जागृत हुआ है। गीता परिवार के जो 4-5 हजार सेवाकर्ता है, जो पूर्व समर्पण के साथ सेवा दे रहे हैं, मैं चाह कर भी उनके साथ वयक्तिक संबंध स्थापित नहीं कर पाता हूँ। परंतु इसके उपरांत भी वे सब इस सेवा को पुर्ण समर्पण के भाव के साथ कर रहे हैं। यह सब सेवाकर्ता स्वयं जाग चुके हैं तथा देश जगाने का जो कार्य चल रहा है उसमें सक्रिय रूप से योगदान दे रहे हैं। लोगों का इस बात का आश्चर्य होता है की गीता परिवार का यह विशाल कार्य पूर्णरूप से केवल सेवा भाव से कैसे चल रहा है। हमें आगे भी और बड़ा कार्य करना है। महाभारत में कहते हैं कि हमें प्रारंभ में ही संतोष नहीं करना चाहिए। जिसने संतोष कर लिया, उसकी प्रगति रुक जाती है। मैं महाभारत को भगवद्गीता का सर्वोत्तम भाष्य मानता हूँ। महाभारत के परिपेक्ष में यदि हम गीता समझते हैं, तो हम वास्तविक रूप में गीता को समझ पाते हैं। अगर हम बाकी बातों में संतोष मानते हैं तो वह ठीक है। परंतु गीता के प्रचार-प्रसार के कार्य में हमें संतुष्ट नहीं होना है। हमें सतत इस बात पर चिंतन करते रहना चाहिए कि हमने बाहर कितने लोगों तक गीता पहुँचाई है और हमारे अंतर में गीता का संदेश कितनी गहराई तक पहुँचा है। इस प्रकार हमें अंतरंग और बहिरंग से गीता के साथ संलग्न होना चाहिए। जो जीवन गीतामय होता है, वह भगवान श्री कृष्ण को अत्यंत प्रिय होता है। गीता प्रचार एवं प्रसार का हमारा कार्य यज्ञ भी है, तप भी है और दान भी हैं। यह कार्य हमारे जीवन में अपने आप सुगंध लाता है, हमारे जीवन को अलौकिक करता है, हमें निराशा से बाहर निकालता है। हमारा दृष्टिकोण सकारात्मक होता है। यह न केवल मोक्ष प्राप्ति का मार्ग है किंतु यह जीवन कैसे जिया जाए इसका प्रत्यक्ष मार्गदर्शक है। इस मार्ग पर आप लोगों के साथ चलने में मुझे स्वयं को अत्यंत आनंद की अनुभूति होती है। आप सब लोग गीता परिवार को एवं



गीता प्रचार-प्रसार के कार्य को संभाल रहे हैं। इससे मुझे और महत्वपूर्ण कार्यों के लिए समय देना संभव हो पा रहा हैं। (प. पू. स्वामीजी रामजन्मभूमि न्यास के कोषाध्यक्ष भी हैं) इसका मुझे आनंद एवं समाधान है। कुछ दिन पुर्व एक सुंदर बात मेरे अंदर से प्रकट हुई : **"हर घर गीता हर कर गीता"** । हमें गीता को हर घर में और हर घर के हर हाथ में पहुंचाना है। यह सूत्र हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमारा जीवन एक आनंद यात्रा है और यह आनंद यात्रा इसी प्रकार चलती रहनी चाहिए।

अपने वक्तव्य का समारोप करते हुए प. पू. स्वामीजी ने हमारे जीवन मे भगवान की उपस्थिति का गुह्य मन्त्र सबको देते हुए कहा कि 'आप लोगों ने मेरा जन्म दिवस मनाया। इस प्रकार के आयोजन में मुझे लेश-मात्र भी रुचि नहीं है। परंतु यदि इससे आप लोगों को आनंद मिलता है, तो यही मेरे लिए आनंद की बात है। हमारा कार्य चलता रहे और इसमें किसी भी प्रकार की व्यक्ति निष्ठा का निर्माण ना हो इसका हमें ध्यान रखना है। मैं आपके साथ हूँ, आप मेरे साथ हैं। **हम दोनों अगर एक दूसरे के साथ हैं तो प्रत्यक्ष भगवान भी हमारे साथ हैं।'**

हम सब गीता भक्ति दिवस मना रहे थे, भगवद्गीता में भक्ति की महिमा वर्णन करने वाला अत्यंत सुंदर एवं अर्थपूर्ण अध्याय है अध्याय क्र.12 इस भक्ति दिवस को अधिक सार्थक एवं आनंदमय बनाने के लिए 12वें अध्याय के सामूहिक अनुपठन से और क्या सुन्दर मार्ग हो सकता था ? नागपुर से श्रीनिवास वर्णेकर जी के नेतृत्व में गीता परिवार नागपुर के सदस्योंकी अगुवाई **बारहवें अध्याय** का **सामूहिक अनुपठन** किया गया। इस में सभी उपस्थित महानुभाव अपने अपने स्थानोंसे सम्मिलित हुए। यह एक अनुपम और अलौकिक दृष्य था, जहाँ विश्व भर से कोने कोने से साधक गीता भक्ति दिवस मनाने हेतु एक साथ, एक सुर में, एक लय में और भक्ति भाव के साथ भक्ति योग की शिक्षा देने वाले श्रीमद्भगवद्गीता के 12वें अध्याय का सहस्त्र कंठोंसे अनुपठन कर रहे थे।

इस भव्य, दिव्य एवं भावविभोर कर देने वाले अनुपठन के पश्चात् गीता परिवार के दक्षिणांचल प्रभारी तथा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री हरिनारायण व्यास जी ने धन्यवाद ज्ञापन दे कर कार्यक्रम का समापन किया। कार्यक्रम के अंत मे सभी को इस कार्यक्रम मे सहभागिता के फलस्वरुप **'गीता भक्ति दिवस प्रमाणपत्र'** डीजिटल स्वरुप मे वितरित किया गया।

आओ गीतासेवी बनें

https://youtu.be/QrjQWnJKIIE

"त्यागो सारी दुर्बलता को, राष्ट्र समर्थ बनाओ !

बन्धु-भाव समता ममता से, सबको गले लगाओ !

"गीता परिवार" का यह ध्येय वाक्य है और इसी भावना को लेकर हमारा कार्यक्रम **"आओ गीतासेवी बनें"** दिनांक **6** फरवरी, रविवार, **2022** को आयोजित किया गया।



कार्यक्रम का शुभारम्भ उद्घोषक सौ. सोनाली काला जी ने

" नमन है माँ शारदे, ज्ञान का वरदान दे !

सेवा के सन्मार्ग को आलोकित हम करें "

इन पंक्तियों के साथ किया। विद्या के दाता गणेश जी और विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती जी से प्रार्थना की गई - **" अबोधता से उठा कर, प्रज्ञा का तू दान दे " !**

परम विदुषी सौं. वन्दना वर्णेकर जी ने अपने स्वागत-भाषण में "गीता परिवार" के सदस्यों के निष्काम सेवा-भाव और कार्य-कुशलता की प्रशंसा करते हुए कहा कि गीताजी की सेवा से हमारा जीवन अधिकाधिक पावन होता चला जाता है। उन्होंने परम पूज्य गुरुवर स्वामी श्रीगोविन्ददेव गिरि जी का मूल सन्देश- **" घर-घर गीता, हर कर गीता"** को दोहराते हुए सन्त ज्ञानेश्वर जी की वाणी को भी उद्धृत किया -**" जो काया,वाचा और मन से गीताजी की सेवा करेगा वह सानन्द साम्राज्य का चक्रवर्ती सम्राट बनेगा"।** हम सभी इस गीता-यज्ञ में सम्मिलित होकर अपनी आहुति प्रदान कर सकते हैं।

इस महायज्ञ में 4000 से अधिक कार्यकर्ता अपनी सेवाएँ एक टीम-भावना के साथ **(Together Everyone Achieves More)** दे रहे हैं। " जयतु जयतु गीता वांगमयी मूर्ति" मोहरूपी असुर को मारने वाली सप्तशती है।

"गीता परिवार" के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और उत्तर भारत के प्रभारी डॉ. आशू जी गोयल, जो कि ऑनलाइन गीता संथा वर्ग के प्रोग्राम डायरेक्टर भी हैं, ने अपने स्वागत-भाषण में नये गीता-सेवियों का स्वागत करते हुए कहा -

वह शक्ति हमें दो दयानिधे,

कर्तव्य-मार्ग पर डट जाएँ,

पर-सेवा पर-उपकार में हम,

जग-जीवन सफल बना जाएँ।



उन्होंने कहा कि सेवा का काम दूसरों को तार कर, खुद तर जाने का होता है। हमारा जन्म होते ही हम पर विभिन्न प्रकार के सामाजिक ऋण प्रारम्भ हो जाते हैं। हम समाज से जो लेते हैं, उसका मूल्य तो सेवा-द्वारा ही चुकाया जा सकता है। गीताजी में भी **"सर्वभूत हिते रताः"** दो बार आया है। उन्होंने परम पूज्य स्वामी गोविन्द देव जी गिरि महाराज, जो कि "गीता परिवार" के संस्थापक और संरक्षक हैं, के शब्दों को उद्धृत करते हुए कहा कि "गीता-परिवार" में कर्म की दृष्टि कर्म की और भाव की दृष्टि सेवा की होती है। इसके पश्चात "गीता-परिवार" में दी जाने वाली सेवाओं से सम्बन्धित एक " परिचय वीडियो" को भी दिखलाया गया।



गीता-परिवार में दी जाने वाली सेवाएँ क्रमानुसार हैं :-

1.तकनीकी सहायक 2.सूचना और प्रौद्योगिकी विभाग 3. समूह-संचालक 4. रचनात्मक लेखन और विवेचन 5. ग्राफ़िक डिजाइनिंग और ऐनीमेशन 6. प्रशिक्षक 7. गीता परम प्रचारक

गीता-परिवार में लगभग 35 विभाग हैं और 4000 से भी अधिक गीता-सेवी कार्यकर्ता इन सबमें अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।



श्री सुरेश जी व्यास ने "टेक्निकल सहायक" सेवा सम्बन्धी, श्री मनीष सिंह जी तोमर ने "सूचना और प्रौद्योगिकी" , श्री हनुमान दास जी बाहेती ने " समूह संचालक", श्रीमती कामिनी जी पन्त ने "रचनात्मक लेखन व विवेचन" और श्रीमती श्रुति जी नायक ने "प्रशिक्षण विभाग" सेवा सम्बन्धी जानकारी दीं। इसके पश्चात् प्रश्नोत्तर का सत्र हुआ जहाँ पर गीता-सेवा सम्बन्धी जिज्ञासुओं ने विभिन्न विषयों पर प्रश्न पूछे जिनके समुचित और सन्तोषजनक उत्तर दिए गये।

कार्यक्रम का समापन प्रार्थना श्लोक द्वारा किया गया।

इसी प्रकार अन्य सेवी सत्र भी प्रति माह होते रहे हैं जिनसे जुडकर अनेक गीता साधक इस गीता महायज्ञ में अपनी आहूति दे रहे हैं-

https://youtu.be/83cbvs1p1tA
आओ गीता सेवी बनें -
Be a Geeta Volunteer - 27-03-22

https://youtu.be/n698pcWK6cs
आओ गीता सेवी बनें -
Be a Geeta Volunteer - 8/05/22

गीता मैत्री मिलन

पुणे, अकोला एवं गोवा

गीता मैत्री हम सबकी यह, जनम - जनम तक बनी रहे।
मधुरिम है यह यात्रा मित्रों, टोली अपनी जमी रहे।।

अतीव उत्सुकता एवं आनंद के साथ लगभग देढ़ वर्ष आभासी पर्दे पर संचालित Learngeeta कार्यक्रम का लगभग साढ़े बारह सौ से भी अधिक गीता प्रेमियों के साथ पुणे में गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. आशू गोयल जी की उपस्थिति में एक गीता मैत्री सम्मेलन आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का आरम्भ हमारी वरिष्ठ प्रशिक्षिका सौ. तृप्ति खण्डेलवाल जी के स्वर में प्रार्थना के साथ हुआ। तत्पश्चात् दीप प्रज्ज्वलन एवं सौ. संतोषी जी मुंदडा द्वारा प्रमुख अतिथि एवं सभी का स्वागत किया गया। इसी क्रम में संगीता जी मनियार द्वारा शाळा मुख्याध्यापक सत्कार एवं सौ. अंजलि तापड़िया दीदी के द्वारा बहुत ही सटीक शब्दों में गीता परिवार का सुंदर परिचय प्रस्तुत किया गया।

"विद्या वैभव दे दो राम" इस पंक्ति को हृदयस्थ करते हुए सत्यनारायण जी मुंदडा द्वारा पुस्तक का विमोचन एवं तदनन्तर सौ. विद्या जी म्हात्रे ने मुख्य अतिथि आ. आशू भैया को आमंत्रित किया।

आशू भैया के द्वारा बिन्दु से सिंधु तक इस विषय को लेकर गीता परिवार का सम्पूर्ण स्वरूप विस्तार से बताया गया।

गीता परिवार का मूल संस्कार है एवं पाँच सिद्धांतों (पञ्चसूत्री) पर सम्पूर्ण कार्यप्रणाली आधारित है उस विषय पर आशू भैया द्वारा आरम्भ में प्रकाश डाला गया।

गीता परिवार का बिन्दु परिचय देते हुए सत्व रजस् एवं तमस् गुणों को बताते हुए कार्यकर्ताओं के स्वभाव एवं उसे उत्कृष्ट बनाने पर जोर दिया।

बिन्दू से सिंधु की यात्रा में गीता परिवार की कार्यप्रणाली, स्वामीजी की एवं शास्त्र की दृष्टि, गीता परिवार का ध्येय एवं मुख्य विचारों को स्पर्श करते हुए कार्यकर्ताओं की कार्य करते समय क्या दृष्टि होनी चाहिए इस पर उन्हीने निम्न बिंदुओं को सभी के समक्ष प्रस्तुत किया -

1. सेवा नही साधना 2. सहनशील स्वभाव
3. शुचिता 4. कार्य महत्वपूर्ण, मैं नही
5. प्रतिस्पर्धा करें, प्रतिद्वन्द्विता नहीं
6. श्रेय रखें नहीं 7. चेतन बनें, जड़ नहीं
8. कार्यनिष्ठा 9. WATCH YOUR WATCH

इसी प्रकार राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. संजय जी मालपाणी की उपस्थिति में गोवा एवं अकोला में भी गीता मैत्री मिलन संपन्न हुए। इसीप्रकार की टीम 11 भी बनी एवं सभी कार्यकर्त्ता उत्साह से भर गयें।





International Yoga Festival Japan



Patanjali Japan Foundation had organized Yoga Festival in the month of June on the Digital platform globally. They honoured Dr. Ashu Goyal Ji by asking him to deliver lectures on Srimadbhagavadgita as an esteemed representative of Geeta Pariwar. He delivered 4 lectures on Karmayoga, Bhaktiyoga, Gyanyoga and Yoga Holistic.

He began by talking about Yoga. Yoga is certainly not a name for some workout or exercise postures.

He gave great insight on Yoga and their four definitions:

To get attached to the SUPREME
To get connected with the SUPREME
To get involved with the SUPREME
Feel oneness with the SUPREME



So, basically Yoga indicates connection with the ultimate consciousness. Therefore, that connection can be achieved through multiple ways. In Indian scriptures there is a mention of different Yogas, such as Ashtang yoga, Dhyana Yoga, Japa Yoga, Tratak yoga, GyanYoga, Bhaktiyoga, Karmayoga, Sanyasayoga, Upasana Yoga, Aatma Yoga etc. Then he spoke of three elements of Karma.

1. Antahkaranam (Inner instruments)
2. Bahir Karanam (external instruments)
3. Upakaranam (Additional instruments)

Further, he covered the three types of Karmaphala -

1. Immediate
2. Short Term
3. Long Term

He very interestingly took the talk ahead by dwelling upon Karma Yoga Circle -

One starts the actions according to these circles. These are the different stages of one's life while moving forward in attaining the ultimate consciousness. All actions initially begin:



1. For the self
2. For the family
3. For the society
4. For the nature & creature
5. For the welfare of all
6. Renunciation of the fruits of all Karma
7. Renunciation of one's ego
8. Oneness with the ultimate Consciousness

On 11th June 2022 he once again spoke on the Essence of Bhaktiyoga.

He mentioned 9 different types of bhakti:

1) Shravana (Listening the 'glories of Lord')
2) Kirtana (Singing the 'glories of Lord')
3) Smaranam (Remembering Lord)
4) PadaSevanam (Serving His Lotus Feet)
5) Archana (Offerings to the lord)
6) Vandana (Prostrating before HIM)
7) Dasya (Serving)
8) Sakhya (Befriending HIM)

9) Atma-Nivedana (Offering oneself to HIM)

On 18th June he spoke about the Essence of Gyan Yoga. The main idea of Gyan Yoga is to focus on Eternal (Sat) by removing our focus from transient (asat)
Who can attain Gyan? He put forth the criteria of eligibility for Gyan. To elaborate it further he mentioned Sadhan Chatushtay -

1. **Viveka (Descrition)**
2. **Vairagya (Non attachment)**
3. **Shat sampatti (6 Virtues)**
4. **Mumukshutva (Longing)**

Then he shed some light on the meaning of knowledge -

- Pratyaksh (PERCEPTION)



- Anumaan (INFERENCE)
- Upmaan (COMPARISON)
- Aaptvachan (VERBAL TESTIMONY)

Seven stairs of Gyan -

1. Shubhechha (Desire of divine)
2. Vichaarna (thinking of divine)
3. Tanumansa (shuddh man)
4. Satvaapatti
5. Asansakti (vairagya from world)
6. Padarth Abhaavani (see unmanifest in manifest thing)
7. Turyaga (तुर्यगा) (beyond Jagrat, Swapna, Shushupti)

Finally he also mentioned the effects of Gyan in spiritual Life-

Equal in pairs of opposite

Fearless about Death

No rebirth after realisation



Attaining the Supreme

No Existence of Asat

Realisation of Brahman

Lives in Sat-Chit-Ananda

On 21st June he concluded these series of lectures with Holistic Yoga. Every session's concluding part involved the Question/Answer Session. First day Ms. Yoka Prachee ji also a sadhak in learngeeta Program shared her thoughts on the lectures. It's with pride to say that, she passed the Geeta jigyasu exam too. She was very much impressed with our program director of Learngeeta Program Dr. Ashu Goyal Ji. This shows how Geeta is spreading to every nook and corner of the earth.

Essence of KARMAYOGA
https://youtu.be/G9chPYAGWdE
Essence of Bhakti Yoga
https://youtu.be/WWtf45s7xZo
Essence of GYANYOGA
https://youtu.be/LWDYoinnrA4
Holistic Yoga
https://youtu.be/VoV-AhgJgh8

Charm of this 'Chardham Yatra'

Shri Srivathsa Joshi, Washington DC. USA



It was in the month of February 2021 that my elder brother Purushotham Joshi who lives in Mumbai, posted a message in our family WhatsApp group, that he was preparing for a small speech during the 'Anandotsava' of his Geeta learning online class. In fact, he even shared the draft of his speech written in Kannada, and some of us in the group, I for sure, did read it and complimented him for that accomplishment. What was 'touching' in his speech (well, the draft) was that he had recollected how our late father used to encourage us in our childhood to take up learning Bhagavadgita and by-heart it if possible. Not that we were disrespectful to our father, but, for some reason or the other we did not really show much interest in it. My brother had also recollected how his Yoga teacher in Mumbai had encouraged him to master Bhagavadgita by learning one shloka a day, and how even that also did not progress much. In the later part of his speech my brother had written little bit about learngeeta.com and requested all of us in our family group to check it out. More so because he felt he found it not just excellent, amazing, but simply a perfect way for learning Bhagavadgita.

That was the trigger for my entry into learngeeta.com! I did not waste any time and immediately registered for L1 classes commencing 1st March 2021. The opening ceremony itself impressed me and so did my first ever class where Dr.Suresh Kumbar was the trainer. Honestly, till then during the pandemic I had used Zoom sessions for a variety of purposes, but certainly not one so divine like Geeta learning class over Zoom! "Arjuna uvaacha... Evam Satatayuktaa ye..." the very first shloka of 12th Adhyaya, that we were

told along with 15th one would be taught to us in L1. Timings of my class were 7am IST which means 8:30 pm (previous day!) Eastern t



ime here in the USA. Four weeks flew like anything. Making and submitting videos of 12th and 15th Adhyaya itself was a thrill and receiving GeetaGunjan certificate was like receiving a big doctorate degree! And by then Suvarna Kakiji's melodious voice creating a divine atmosphere in our home. The learning journey continued to L2, L3, and now I am in L4. Indeed a 'Chardham Yatra' of special unique charm! Now, the other side of my story. Probably this is even more exciting and enthralling! Soon after completing my L1, I had written an article about GeetaPariwar in my weekly column in 'Vishwavani' a leading Kannada newspaper published from Bengaluru. That was on 4th April 2021. It did some magic! Till then there used to be daily 5 batches in Kannada, and the numbers jumped to 16 and then to 39 in the subsequent batches! While it was exciting to notice the surge, there weren't enough trainers and techno stars available to handle those Kannada batches. As a 'prayashchitta' (in good sense) of writing that article, I too had to volunteer to become a trainer for the L1 batch that started on 24 May 2021. If I look back now, I think that was an even greater turning point personally for me. I had no experience whatsoever of teaching, but this one transformed me into a teacher / trainer / coach / mentor whatever you want to call. Yes, I started enjoying it, more so for the fact that I am offering this Seva to Krishna Paramatma, in the form of helping others learn the 'Song Celestial'. By end June 2021 since I had completed my L2 learning, I was persuaded to be trainer for next L2 batch also. While my 'learning' was in the evening time here (morning time in India), my 'teaching' had to be in the early morning time here (late afternoon in India). So, I would get up at 4 am to get ready for handling class at 5am. What an excellent way to start my day! This has been continuing as I am taking L3 and now L4 classes too in the morning while keeping my learning (in L4) for the evening slot. The refinement it has done in me, is something I have no words to explain.

It is my firm belief that every Indian, for that matter every person on this earth, has the capability to recite Bhagavadgita the song of God, because we all are creation of God after all! Only thing is that capability is latent and needs a trigger to get revealed. The way I have been observing in my classes, it's a great feeling to see that capability getting uncovered. That's precisely what I mention in every Anandotsava I participate, that- learngeeta.com helped each of us become a great discoverer. We discovered two things: One, that the book 'Bhagavadgita' which was lying in our bookshelves gathering dust, is a greatest treasure of unparallel value. And two, each one of us do have the capability to recite the 700 shlokas in it the way God himself recited them! Is it not a great accomplishment worthy of pride? It is my heartfelt wish that through learngeeta.com more and more people realize this accomplishment for themselves. **Jai Shri Krishna!**



Spiritual Awakening - Learngeeta.com

Smt. Anita Ravishankar, Pune

The dreaded pandemic brought the normal lifestyle to a halt, leaving a wide gap in the day, with nothing constructive to be done. Having taken a retirement from the absorbing consultancy assignment – needing daily dedicated work hours and travel, the day just ended with boring routines. Such a pressing gap after 35 years of continuous and challenging Corporate work was overwhelming. But as they say Shrikrishna willing, nothing is difficult. Soon enough and fortunately enough got introduced to the free online Santha Classes organized by Geeta Pariwar. What started with skepticism, soon turned to curiosity and within 3-4 months became a meaningful purpose. Anita Sangamnerkar Ji my L2 Trainer suggested that I should apply as a Trainer. Her confidence gave me the courage and I applied. It was a complete turning point, and this casual journey to learn Geeta, became an extremely engrossing daily activity, that I sought and looked forward to exactly like the work that I was used to. As a Sadhak I was happy, as a Volunteer and Trainer I was ecstatic. Further opportunities to volunteer in other arena's came when my interaction started with Jyoti Shuklaji. She understood my capabilities and limitations very well and gave me very rewarding tasks.

Met more interesting and inspiring Teachers and Colleagues/Friends on the way, making the journey even more beautiful with each passing day.

My wish for Geeta Pariwar- may it flourish and reach each and every household, each and every hand, as per the mission statement coined by Parampujya Swamiji. May it assist in bringing back the past glory to this beautiful nation. May it help consolidate India's position as the undisputed leader in Spiritual awakening and service to Mankind. And last but not the least, may it inspire more and more ignorant people like me to come into this fold of enlightenment and wisdom, bhakti and awakening, faith and surrender.

Class Monitoring

Smt. Shraddha Raodeo, Bhagyanagar



Online Geeta classes (OGC) are conducted with high standards. The success of OGC lies in the synchronous working of its 35+teams together!! The best part is that a volunteer can contribute more than one team as per his/her capacity. Here, we will have an insight into working of a backend team – the Monitoring team.

The monitoring team volunteers are mute observers of interaction between sadhaks and faculty on zoom and whatsapp.

Why is monitoring needed??

- The number of classes are increasing exponentially at each level of OGC. It is critical to maintain the quality of classes with the increased number of sessions.
- Each month thousands of volunteers join as faculty members. Any training needs for these faculty should be identified on a regular basis.
- Introspection and continuous improvement are key to quality services.
- Divine task of connecting sadhaks with Shrimad BhagwadGeeta should have no shortcomings.

The functioning of monitoring team is elaborated below:

- The monitors observe the ongoing batches across all four levels of OGC
- Classes are attended by monitors just like participants.
- Best practices followed by Trainers, Technical assistants and Group Coordinators are noted.
- Any discrepancy from the pattern laid down by OGC is noted and reported to the respective admin teams.

- The observations from monitoring team form the inputs for training departments of all faculty members.

Monitoring has proved to be a good learning platform for monitors too as they get to learn a lot by watching classes of their co-volunteers.

As a part of monitoring team, we are blessed to see the interaction of dedicated volunteers and devoted sadhaks. Watching them reminds me of the saying- **यत् भावो तत् भवति...** The services are given and taken with such devotion – that explains the graceful global expansion of the LearnGeeta program.

The Selection@Monitoring…

Each team at OGC carefully selects dedicated sadhaks as their faculty members. Similar procedure is followed in the monitoring team too. Faculty members fulfiling the following criteria can offer sewa as monitoring faculty.

- Completed more than four months as Trainer, Technical assistant ot Group coordinator faculty at OGC in any level.
- Utmost regards for Geeta Pariwar procedures- In their service as Trainer, Technical Assistants or Group co-ordinators, they should have followed all rules of conducting Geeta classes.
- Volunteers should have keen observation skills.
- Capacity to identify areas of improvement with a progressive, positive and pleasant vision.

With expansion in number of classes at all levels, a growth of monitoring team is also inevitable.

The monitoring team will continue to strive for the betterment of Online Geeta Classes. It will continue to work closely with all other teams for qualitative enhancement of classes. May the glory of Shrimad Bhagwad Geeta reach millions in most graceful way.

Beginning a New Era...

Geeta Pariwar's Online Geeta Classes have been a life-changing project. It has been transformational not only for its participants but also for the thousands of volunteers working for it. One of the most heart-warming facts is the number of youths associated with the platform. The wave of Learngeeta.com is instrumental in creating a resourceful generation for the world. Young and awakened minds working as Geeta sewis build a very optimistic picture of our country's future.

Many of us joined the Online Geeta Classes (OGC) by accident and are now dedicated to it for life. Those who come as participants (sadhaks), strive to stay connected with Geeta Pariwar and offer sewa in its endeavors. Thousands of enthusiastic volunteers are creating history and giving a new direction to not only their lives but also to lakhs more.

The four-stage course- चारधाम यात्रा- yatra, is an investment, not restricted to this birth. The fruits of this karma will be carried forward to our future births and what more blessing can we seek than staying connected with Shri Krishna and Shrimad Bhagvad Geeta in all births to come…

My Life as a Geeta Sewi..

Being a Geeta Sewi at Geeta Pariwar's OGC has added a new and happy character to my life. As an ordinary person, confusion, chaos, brittle thoughts, etc. are a part of our daily lives. However, with the strength of satvic karma at OGC, stability gets added to all spheres of one's life.

The divine blessings of Param Pujya Swamiji, principles laid down by him and guidance of senior karykartas of Geeta Pariwar have given a progressive foundation to OGC. At OGC, each day brings something new to learn.

Every class, each vivechan session and event gives an enriching experience. Interacting with numerous sadhaks, working with new volunteers, getting to see new talents and witnessing the change that learning Shrimad BhagwadGeeta brings in everyone's life- are just few of the blissful experiences I get every day.

Geeta Pariwar is an extended family, so true to its name!

गीता - मेरी प्राणवायु

महेश शेवाळे, मुंबई

नमस्कार, मै महेश शेवाळे, मुंबई निवासी हूँ। मेरे दो पुत्र हैं, ज्येष्ठ पुत्र रोहित आयु १५ वर्ष तथा अवधूत आयु ११ वर्ष। इनमे रोहित का जन्म से ही एक कान पूर्ण रूप से और एक कान आधे से ज्यादा बंद था। इसके कारण उसकी श्रवणशक्ति में बड़ी मात्रा में कमी थी। श्रवणशक्ति में कमी के कारण उसके उच्चारण में भी काफी समस्याएं थी और वह साधारणरूप से उच्चारण नहीं कर पाता था। वह हिंदी-मराठी भी साधारण रूप से बोल नहीं सकता था। ऐसे मे संस्कृत उच्चारण तो उसके लिए बहुत ही ज्यादा कठिन होता था।

पिछले साल अप्रैल माह में हमने उसके एक कान का ऑपरेशन करके इम्प्लैन्ट किया है। उसके कारण अब उसकी श्रवण क्षमता में काफी सुधार हुआ है। वह ठीक से सुन पाता है, परंतु उसके उच्चारण में अभी पूर्ण रूप से सुधार नहीं हो पाया है।

जब हमें गीता परिवार के ऑनलाइन गीता क्लासेस के बारे में पहली बार ज्ञात हुआ, तो हमने हमारे घर के सभी सदस्यों का पंजीकरण किया था परंतु रोहित का नहीं किया था। उसका कारण यह था कि वह संस्कृत उच्चारण ठीक से नहीं कर पाएगा तो उसमें न्यूनता की भावना आ जाएगी, उसके आत्मविश्वास मे कमी आएगी। और यह उसके लिए दीर्घकालीन समस्या हो जाएगी। तो मैंने तब मेरी पत्नी, मेरी माँ-पिताजी, मेरा भतीजा मेरे छोटे पुत्र अवधूत इनका ही पंजीकरण किया।

इस कक्षा के प्रारंभ के पश्चात हमारे घर में इस गीता संस्था वर्ग के बारे में सदा चर्चा होती रहती थी।

रोहित को बचपन से ही प्राचीन भारतीय इतिहास के बारे में गहरी रुचि है। उसने रामायण और महाभारत दोनों का भरपूर अध्ययन किया हुआ है। घर मे सदैव गीता संथा वर्ग की चर्चा, श्लोकोंका पठन इत्यादि सुनकर वह भी गीता संथा वर्ग मे सम्मिलित होना चाहता था। हमने उसको समझाया कि उसकी विद्यालय की परीक्षा है तथा उसे उच्चरण की समस्याएं भी है। तो वह ठीक से संस्कृत श्लोक पढ़ नहीं पाएगा, इसलिए हम उसका पंजीकरण नहीं कर रहे हैं। तो उसने हम सब से बारंबार अनुरोध किया कि वह मन से प्रयास करेगा, खूब अभ्यास करेगा और ठीक से उच्चारण करेगा। वह उसे केवल एक अवसर देने के बिनती करता था।

तो उसकी लगन और इच्छा देखकर हमने नवंबर स्तर-१ के लिए उसका पंजीकरण कर दिया। उसके साथ ही में मेरा छोटा भाई और उसकी पत्नी ने भी संथा वर्ग का पंजीकरण कर दिया और वे दोनों भी रोहित के साथ ही कक्षा करने लगे। रोहित ने पूर्ण समर्पण भाव के साथ ही यह कक्षा पूर्ण की। उसने मन से सभी श्लोकों का एवं दोनों अध्यायोंका अभ्यास किया और अत्यंत सुंदर रूप से श्लोकों का पठन करने लगा। इससे उसकी उच्चारण में काफी सुधार हुआ और संस्कृत के कठिन शब्द भी वह ठीक से उच्चारण करने लगा। प्रथम स्तर (एल १) समाप्त होने के पर उसने द्वितीय स्तर (एल २) का भी

पंजीकरण किया। दूसरे स्तर मे जैसे ही 16 वा अध्याय समाप्त हुआ हो गया उसके केवल 10 दिन बाद गीता जिज्ञासु परीक्षा थी। तो उसने वह परीक्षा भी देने का निश्चय किया और परीक्षा का मन से अभ्यास प्रारंभ कर दिया। १६ वा अध्याय ०६ जनवरी को समाप्त हुआ था तो जिज्ञासु परीक्षा 16 जनवरी को थी। उसने जिज्ञासु की परीक्षा भी दे दी और इस परीक्षा मे उसे 100 में से 92 गुण प्राप्त हो गए! जब हमारे घर में मेरे माता-पिता और मेरी पत्नी ने रोहित के गुण देखे तो वह सब के सब भाव विभोर हो गए।

जिस के भविष्य को लेकर वे पिछले 15 साल से चिंतित थे वह चिंता कम हो गई। उनको विश्वास हो गया कि इस पुत्र पर श्रीगुरु की कृपा और श्रीकृष्ण भगवान का आशीर्वाद है।

वह सभी वर्गों में नियमित रूप से जाता भी है। जब से उसने अपना संथा वर्ग शुरू किया है तब से उसने उसके अध्याय के संदर्भ में जो भी विवेचन होते है, तो उनमे से एक भी विवेचन सत्र मे वह अब तक अनुपस्थित नहीं रहा है।

रोहित ने स्तर २ पूर्ण करके अब वह स्तर ३ कर रहा है। वह अब आगे जाकर गीता पाठक, गीता पथिक एवं गीताव्रती यह सभी परीक्षाएं भी देने वाला है। साथ ही मे 16 वर्ष की आयु होते ही गीता परिवार मे सेवा भी देने वाला है।

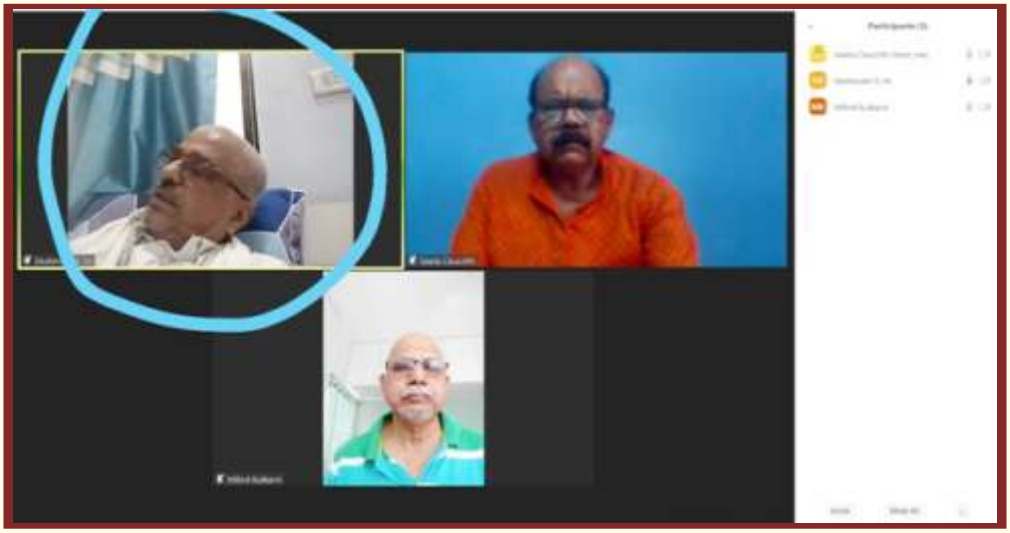
इस प्रकार गीता परिवार और गीता पठन ने रोहित के जीवन में एक चिरस्थाई सकारात्मक परिवर्तन लाया है।

इसके लिए हम सब गीता परिवार के हृदय से आभारी है।

सेवा की अद्भुत मिसाल

सुनील कापड़ी, मुम्बई

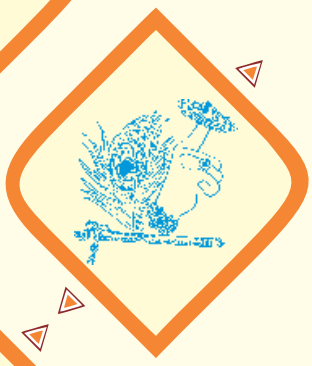
श्री संत अंबादास मुरलीधर देशमुख जो कि नांदेड़ से लर्नगीता में प्रशिक्षक रूप से सेवारत हैं, आज गीता पाठक की परीक्षा में परीक्षक के रूप में सेवा दे रहे थे लेकिन उनके ऐसे लेटकर परीक्षा लेना मॉनिटरिंग टीम को असमंजस में डाल गया। जब इसका कारण पता किया गया तो पता चला कि उनके पैर में गम्भीर फ्रेक्चर होने के कारण उनका ऑपरेशन हुआ है और उनके पैरो में लोहे की रॉड डालनी पड़ी है। अस्पताल के पलंग से लेटे लेटे ही उन्होंने 8 परीक्षार्थियों की परीक्षा मात्र २ मिनट का अवकाश लेकर ली। सेवा, तितिक्षा, समर्पण और कार्यनिष्ठा का यह उदाहरण हृदयस्पर्शी व नतमस्तक कर देने वाला है। ऐसे अनेक गीतासेवियों के संस्मरण सुनने में आते हैं। सभी को हृदयपूर्वक नमन।



साधकों के व्याकरण सम्बन्धी समस्यायों के हल हेतु विभिन्न व्याकरण सत्रों का आयोजन हिंदी एवं अंग्रेजी भाषा में किया जाता है -

Level 3 - Geeta Grammar Class - Hindi	https://youtu.be/e4d3G26ZMts
Level 3 - Geeta Grammar Class - English	https://youtu.be/bribku_6Njc
Level 1 - Geeta Grammar Class- English	https://youtu.be/BK3LnXAhsk4
Level 1 - Geeta Grammar Class Hindi	https://youtu.be/W7W9DfWHF8M
Level 1 - Geeta Grammar Class English	https://youtu.be/AJX8BD7UOBI
Level 1 - Geeta Grammar Class Hindi	https://youtu.be/vZ9BWCVlUpc

प्रश्नमाला

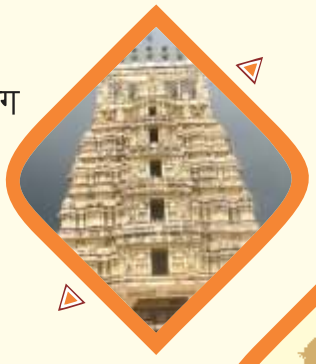




1. महर्षि वाल्मीकी का बचपन का क्या नाम था ?
   रत्नाकर
2. महर्षि विश्वामित्र का क्षत्रिय दशा का क्या नाम था ?
   विश्वरथ
3. लक्ष्मण की मूर्च्छा दूर करने हेतु हनुमानजी किस पर्वत को ओषधि सहित उठाकर लाए थे?
   द्रोणगिरि
4. रामायणकालीन नगरी मधुपुरी का वर्तमान में क्या नाम है?
   मथुरा
5. मेघनाद किस देवी की पूजा किया करता था ?
   निकुंबला
6. बालि और सुग्रीव किस वानर से उत्पन्न हुए थे ?
   ऋक्षराज
7. किस ऋषि को 'समुद्रचुलुक' कहते हैं ?
   अगस्त्य
8. किस कौए ने गरुडजी को रामकथा सुनाई थी ?
   काकभुशुण्डि
9. रामचरितमानस का सबसे छोटा कांड कौन सा है ?
   किष्किन्धा कांड
10. राजा जनक के पुरोहित का क्या नाम था ?
    शतानंद

11. रामायण के अनुसार अयोध्या की स्थापना किसने की थी ?

मनु ने



12. लंका जाने के लिए पुल बांधते समय श्रीराम ने किस शिवलिंग की स्थापना की थी ?

रामेश्वरम



13. रावण ने पुष्पक विमान किस से छीना था ?

कुबेर से

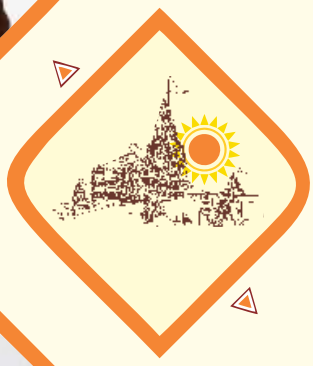
14. कौन सी राज्य श्रीलंका के समीप समुद्र में रहती थी और उड़ते हुए जीवो को खींच कर खा जाती थी ?

सिंहिका



15. रावण द्वारा हरण के बाद सीता को कितने दिन लंका में गुजारने पड़े ?

४३५ दिन



16. लंका के पश्चिमी द्वार पर मौजूद रक्षक धूम राष्ट्र का वध किसने किया था ?

हनुमान ने



17. भगवान राम को विष्णु जी का कौन सा अवतार माना जाता है ?

सातवाँ अवतार माना जाता है।

18. वाल्मीकी रामायण की रचना किस छंद में हुई है ?

अनुष्टुप



19. रामायण महाकाव्य का दूसरा नाम क्या था ?

पौलत्स्य-वध अथवा दशानन-वध

20. राजा जनक की आज्ञा से राजा दशरथ को बुलाने के लिए कौन मंत्री अयोध्या गए थे ?

सुदामन्

21. राजा जनक के छोटे भाई का क्या नाम था ?

कुशध्वज

22. लक्ष्मण, हनुमान, भरत और शत्रुघ्न को किन दो भाइयों ने युद्ध में पराजित कर दिया था ?

लव-कुश



23. उस वानर यूथपति का क्या नाम था जो गेरु के समान लाल रंग का था ?

गवय



24. लंका-दहन के पश्चात् हनुमान किस पर्वत पर चढ़कर, समुद्र लाँघकर वापस आए थे ?

अरिष्ट



25. रावण को किसने छह माह तक अपनी काँख (बगल) में दबाए रहा था ?

बालि



26. विभीषण के किस अनुचर पक्षी का रूप धारण कर, लंका जाकर रावण की रक्षा–व्यवस्था तथा सैन्य-शक्ति का पता लगाया था ?

अनल



27. समुद्र-मंथन से कौन सा अश्व निकला था ?

उच्चै:श्रवा

28. समुद्र-मंथन से कौन सी मणि उत्पन्न हुई थी ?

कौस्तुभ



29. किस तीर्थ डुबकी लगाकर श्रीराम ने परमधामको प्रस्थान किया था ?

गोप्रतार

Scrambled Shlokas

नीचे दिए श्लोकों को सही क्रम में लगाएं-

1. विवस्वान्मनवे प्रोक्तवानहमव्ययम् मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् इमं विवस्वते प्राह योगं
2. हृषीकेशो एवमुक्तो भारत गुडाकेशेन स्थापयित्वा रथोत्तमम् सेनयोरुभयोर्मध्ये
3. मे बुद्धिं निश्चित्य व्यामिश्रेणेव येन वाक्येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम् तदेकं मोहयसीव वद
4. धूमेनाव्रियते मलेन गर्भस्तथा यथोल्बेनावृतो वह्निर्यथादर्शो तेनेदमावृतम् च
5. मात्रास्पर्शास्तु शीतोष्णसुखदुःखदाः आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व कौन्तेय भारत
6. श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः सर्वं कर्माखिलं परिसमाप्यते पार्थ ज्ञाने परन्तप
7. ये यथा मां पार्थ भजाम्यहम् मनुष्याः प्रपद्यन्ते सर्वशः मम तांस्तथैव वर्त्मानुवर्तन्ते
8. सम्यगुभयोर्विन्दते एकमप्यास्थितः साङ्ख्ययोगौ न फलम् प्रवदन्ति पृथग्बालाः पण्डिताः
9. एकं स्थानं गम्यते पश्यति योगं स यः पश्यति यत्साङ्ख्यैः तद्योगैरपि साङ्ख्यं च प्राप्यते च
10. कुरुते यद्यदाचरति जनः स यत्प्रमाणं श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो लोकस्तदनुवर्तते
11. सदृशं निग्रहः किं प्रकृतेर्ज्ञानवानपि चेष्टते स्वस्याः प्रकृतिं करिष्यति भूतानि
12. भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम् न व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ विधीयते
13. युगे दुष्कृताम् सम्भवामि साधूनां परित्राणाय धर्मसंस्थापनार्थाय विनाशाय च युगे
14. चाप्रियम् स्थिरबुद्धिरसम्मूढो ब्रह्मविद् प्रहृष्येत्प्रियं नोद्विजेत्प्राप्य न ब्रह्मणि स्थितः प्राप्य
15. द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते सौभद्रश्च महाबाहुः शङ्खान्दध्मुः द्रुपदो पृथक्पृथक्
16. देहा अनाशिनोऽप्रमेयस्य नित्यस्योक्ताः इमे शरीरिणः अन्तवन्त तस्माद्युध्यस्व भारत
17. द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा योगयज्ञास्तथापरे यतयः संशितव्रताः स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च
18. ब्रह्मयोगयुक्तात्मा यत्सुखम् सुखमक्षयमश्नुते बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि स

Scrambled Shlokas



1. इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम् विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत्

2.एवमुक्तो हृषीकेशो गुडाकेशेन भारत सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमम्

3. व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम्

4. धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम्

5. मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत

6. श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परन्तप सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते

7. ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः

8. साङ्ख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः एकमप्यास्थितः सम्यगुभयोर्विन्दते फलम्

9. यत्साङ्ख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते एकं साङ्ख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति

10. यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते

11. सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति

12. भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम् व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते

13. परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे

14. न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम् स्थिरबुद्धिरसम्मूढो ब्रह्मविद् ब्रह्मणि स्थितः

15. द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते सौभद्रश्च महाबाहुः शङ्खान्दध्मुः पृथक्पृथक्

16. अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत

17. द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा योगयज्ञास्तथापरे स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतयः संशितव्रताः

18. बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि यत्सुखम् स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्षयमश्नुते

Crossword Story

एक कहानी, जो विश्वास व समर्पण, नियति एवं ईश्वरत्व पर है। यह घटना तब की है जब समस्त देश के असंख्य सैन्य-दलों को भारत के सर्वाधिक रक्तरंजित महायुद्ध के लिये संघटित किया जा रहा था। कौरवों व पांडवों के बीच होने वाले महायुद्ध महाभारत के लिये, जो कि अठारह दिनों तक चलने वाला था।

कुरुक्षेत्र के युद्धक्षेत्र को विशाल अक्षौहिणी सेनाओं के आवागमन के योग्य बनाने हेतु सज्ज किया जा रहा था। प्रतिस्पर्धी तंबुओं के लिये स्थान साफ किये जा रहे थे। विशाल सेनाओं के लिये भोजन पकाने हेतु लकड़ियों के विशाल गट्ठर बनाये जा रहे थे। हाथियों द्वारा वृक्षों को गिराया जा रहा था। ऐसे ही एक वृक्ष पर एक गौरैया का घोंसला था जिसमें चार छोटे बच्चे थे। जैसे ही पेड़ को गिराया गया उसका घोंसला धरती पर गिर पड़ा। बच्चे जो अभी उड़ने के लिये बहुत छोटे थे, चमत्कारिक ढंग से सही-सलामत थे।

असुरक्षित व भयभीत गौरैया ने चारों ओर मदद के लिये देखा। उसी समय उसे कृष्ण दिखाई दिये जो अर्जुन के साथ मैदान का निरीक्षण कर रहे थे। वे वहाँ युद्धभूमि का परीक्षण करने आए थे जिससे युद्ध के आरंभ होने से पहले एक विजयी सैन्य रणनीति पर विचार किया जा सके। गौरैया ने कृष्ण के रथ के पास पहुँचने के लिये पूरी शक्ति से अपने पंख फड़फड़ाए।



"हे कृष्ण, कृपया मेरे बच्चों की रक्षा कीजिये" गौरैया ने प्रार्थना की। "कल जब यह युद्ध आरंभ होगा तो यह सब कुचले जाएंगे।"
"मैं तुम्हें सुन रहा हूँ" उन्होंने कहा जो सर्वज्ञ हैं। "किंतु मैं प्रकृति के नियम में बाधा नहीं डाल सकता।"
"भगवन मैं केवल इतना जानती हूँ कि आप मुझे बचाने आये हैं। मैं अपने बच्चों का भाग्य आपके हाथों में सौंपती हूँ। आप उन्हें मार सकते हैं या फिर बचा सकते हैं। अब यह आप पर है।"
यह संकेत करते हुए कि वे इस विषय में कुछ भी नहीं कर सकते, कृष्ण ने साधारण मनुष्य की भांति कहा, "समय का पहिया तो बिना विचार किए चलता है"।
"मैं कोई दर्शनशास्त्र नहीं जानती।" गौरैया ने विश्वास एवं श्रद्धा से कहा "आप ही समय का पहिया हैं। मैं तो यही जानती हूँ। मैं आत्मसमर्पण करती हूँ।"
"फिर अपने घोंसले में तीन सप्ताह का भोजन एकत्रित कर लो।"

इस वार्तालाप से अनभिज्ञ अर्जुन उस गौरैया को भगा रहा था। कृष्ण गौरैया को देखकर मुस्कुरा रहे थे। गौरैया ने

अभिवादन स्वरूप थोड़ी देर अपने पंख फड़फड़ाए और अपने घोंसले पर वापस आ गई।

दो दिन पश्चात् युद्ध आरंभ की घोषणा हेतु शंखनाद होने से पूर्व कृष्ण ने अर्जुन से उसका धनुष-बाण मांगा। अर्जुन भौचक्का था क्योंकि कृष्ण ने युद्ध में शस्त्र न उठाने की प्रतिज्ञा ली थी। इस के अतिरिक्त अर्जुन को यह विश्वास था कि वह ही वहाँ सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर है।

"आज्ञा दें प्रभु" उसने दृढ़ विश्वास से कहा "मेरे बाणों के लिये कुछ भी अभेद्य नहीं है।"

अर्जुन से चुपचाप धनुष लेते हुए कृष्ण ने एक हाथी पर निशाना साधा। किंतु उस जानवर को मार गिराने के बजाए वह तीर उसके गले में लटकी घंटी पर लगा और चिंगारियाँ निकलीं।

कृष्ण को एक सरल सा निशाना चूकते देख अर्जुन अपनी हंसी रोक न सका।

"क्या, मैं करूँ?" उसने प्रस्ताव किया।
पुनः उसके प्रश्न एवं प्रतिक्रिया को अनदेखा करते हुए कृष्ण ने उसे उसका धनुष वापस कर दिया और कहा कि इसके आगे कुछ और करना आवश्यक नहीं है।

"किंतु केशव, आपने हाथी को क्यों निशाना बनाया?" अर्जुन ने पूछा।
"क्योंकि यही वह हाथी है जिसने उस पेड़ को गिराया था जिस पर उस गौरैया का घोंसला था।"
"कौन सी गौरैया?" अर्जुन ने आश्चर्य प्रकट किया "और वह हाथी सकुशल और जीवित है। केवल उसकी घंटी ही गिरी है।"
उसके प्रश्न की उपेक्षा करते हुए श्री कृष्ण ने उसे अपना शंख बजाने का आदेश दिया।

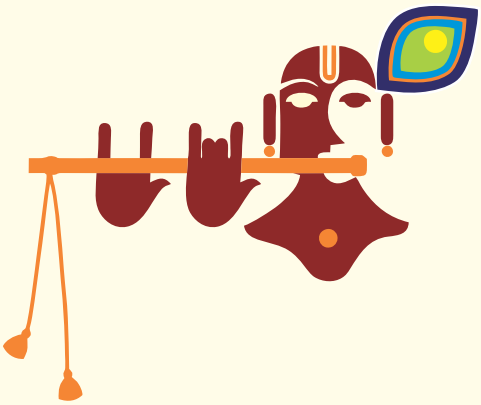
युद्ध शुरू हुआ और अगले अठारह दिनों में अनगिनत जीवन नष्ट हो गये। अन्त में पांडवों की विजय हुई। पुनः कृष्ण अर्जुन को लेकर रक्तिम युद्धक्षेत्र का निरीक्षण करने गये। वहाँ कई शव पड़े थे जिनका अंतिम संस्कार भी नहीं किया गया था। युद्ध-भूमि में कटे हुए सिर, हाथ-पैर, निर्जीव घोड़े व हाथी कूड़े करकट के समान पड़े हुए थे।

कृष्ण एक स्थान पर रुके और हाथी की एक घंटी को विचार मग्न होकर देखने लगे।
उन्होंने कहा "अर्जुन, क्या तुम मेरे लिये इस घंटी को उठाकर दूसरी ओर रख दोगे?"

यद्यपि आदेश सरल था किंतु अर्जुन को तात्पर्य समझ नहीं आया। आखिरकार इस विशाल युद्धक्षेत्र में जहाँ बहुत सी अन्य वस्तुओं को हटाने की आवश्यकता थी, कृष्ण ने उसे एक तुच्छ धातु के टुकड़े को हटाने के लिए क्यों कहा? उसने उन्हें प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा।

"हाँ, वह घंटी। यह वही घंटी है जो उस हाथी के गले से तब गिरी थी जब मैंने उस पर तीर चलाया था।"

बिना कोई प्रश्न किये अर्जुन उस भारी घंटी को हटाने के लिये झुका। जैसे ही उसने उसे उठाया उसका संसार सदा के लिये परिवर्तित हो गया।



एक, दो, तीन, चार, पाँच। चार छोटी चिड़िया एक के पीछे एक करके उड़ गयीं और उनके पीछे एक गौरैया थी। माँ चिड़िया कृष्ण के चारों ओर अत्यधिक प्रसन्नता में चक्कर लगाते हुए परिक्रमा करने लगी। वह एक घंटी जो कृष्ण ने अठारह दिनों पूर्व विभाजित की थी उसने चिड़िया के पूरे परिवार की रक्षा की।

"मुझे क्षमा करें कृष्ण" अर्जुन ने कहा "आपको मानव शरीर में साधारण मनुष्यों की भांति व्यवहार करते देख मैं भूल गया था कि आप सचमुच कौन हैं।"

कृष्ण ने गौरैया को युद्ध भूमि में ही छोड़ दिया था क्योंकि यह उसके भाग्य में पूर्व निर्धारित था। वह चिड़िया अपने बच्चों के साथ किसी सुरक्षित स्थान पर जाने की इच्छा भी प्रकट कर सकती थी। वह कृष्ण से उसे अपने साथ ले जाने के लिए भी तर्क कर सकती थी। वह विनती कर सकती थी कि उसे तीन सप्ताहों का भोजन प्रदान किया जाये। उसने इनमें से कुछ भी नहीं किया। उसने केवल निर्देशों का पालन किया तथा स्वयं को उनके हाथों में सौंप दिया जिस पर उसे विश्वास था। उससे जो प्रयास अपेक्षित था उसने उसका त्याग नहीं
गीता में बार-बार ईश्वर पर पूर्ण रूप से विश्वास कर खुद को उन्हें सौंप देने की बात कही गई है। अतः मनुष्य को ईश्वर की भक्ति में पूर्णतः खुद को समर्पित कर देना चाहिए, जो भी हो रहा है उसे उनकी ही इच्छा मानकर उनका नाम जपना चाहिए। ऐसा करने वाला मनुष्य संसार के समस्त पापों से मुक्त हो ईश्वर के कृपा का पात्र बनता है और उसके सभी पापों का नाश होता है।



स्वयं (अपने आपको) भगवान् के अर्पित करना कि मैं भगवान् का ही हूँ और भगवान् ही मेरे हैं। स्वयं को भगवान् के अर्पित करने से नाम-जप, चिन्तन, ध्यान, सेवा-पूजा, आदि तथा शास्त्रनिहित कर्म मात्र स्वतः भगवान् के लिए ही होती हैं।

शरीर प्रकृति का और जीव भगवान् (परमात्मा) का अंश है। प्रकृति के कार्य शरीर, इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि और अहम् से तादात्म्य, ममता और कामना न करके केवल भगवान् को ही अपना मानने वाला यह कह सकता है कि 'मैं भगवान् का हूँ और भगवान् मेरे हैं।' जैसे की चिड़िया ने स्वयं को अपने बच्चोंसहीत भगवान श्रीकृष्ण को सम्पूर्ण विश्वाससे समर्पित कर दिया था।

रात्री के बाद निश्चीत सूर्योदय होना है यह सम्पूर्ण जगत का विश्वास। कीचड़ में उगते कमल को भगवद् चरणों में स्थान मिलना है यह विश्वास। गोपियोंको कृष्ण के प्रति अनुरागी विश्वास। संत सज्जनों को भगवद् भक्ति लिनता से मोक्ष प्राप्ति का विश्वास। सत्य को विश्वास की असत्य की हार निश्चित है।

यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम् ।
असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते ।।3।।

इस श्रीमद्भगवदगीता के अद्याय 10 के 3 रे श्लोक कोवर्तमान परिप्रेक्ष्य में समझा जाए तो जो भी हो रहा है उसको भगवान की इच्छा जानते हुए उसको स्वीकार करते हुए अनुशासन में रहें व उसकी सत्ता को सर्वोपरि मानें। भगवान अजन्मा है। वह समय समय पर पकृति को संतुलित भी करता है। यदि हम अनादि भगवान की सत्ता में पूर्ण विश्वास करते हुए उसे ही सब कारणों का कारण जानकर उनकी भक्ति करें तो भय व दुःख से मुक्ति मिलती है तथा समस्त पापों का भी नाश होता है।

निस्वार्थ भाव के साथ व सम्पूर्ण श्रद्धा से कर्म सर्वशक्तिमान परमेश्वरको अर्पण करनाही समर्पण है

समर्पण से ही परमात्मा सहाय बनते हैं। मीरा ने समर्पण यह कहकर कि 'मेरो तो गिरधर गोपाल बस दूसरो न कोई' किया तो मीरा को पिलाया जाने वाला जहर परमात्मा ने अमृत में बदल दिया। द्रौपदी ने हार थक कर जब अंत में केवल और केवल श्रीकृष्ण को समर्पण किया तो भगवान श्रीकृष्ण ने उनका चीर हरण नहीं होने दिया। समर्पण। राजा जनक ने अष्टावक्र ऋषि के प्रति समर्पण किया तो राजा जनक को तत्क्षण ज्ञान हो गया। रामकृष्ण परमहंस के प्रति बालक नरेंद्र का, जो कि बाद में स्वामी विवेकानंद के नाम से जाने गए, समर्पण हुआ तो काली मां उनके हृदय में प्रकट हो गई।

महाभारत युद्ध के दौरान अपने आपको स्वावलंबी समझ अर्जुन योगेश्वर श्रीकृष्ण भगवान के प्रति समर्पण को भूले तो धनुर्धारी अर्जुन के तीर चलने रुक गए। अर्जुन ने पीछे मुड़कर श्रीकृष्ण को निहारा। श्रीकृष्ण बोले 'चलाओ तीर।' अर्जुन सब कुछ समझते हुए बोले, 'भगवान भूल हो गई थी।' भगवान के प्रति अर्जुन का समर्पण भाव बना तो पुन: तीर चलने आरंभ हो गए। त्रेतायुग के अवतार भगवान श्रीरामचंद्र के प्रति भक्त हनुमान के समर्पण से हनुमान को



इतनी शक्ति प्राप्त हो गई थी कि उन्होंने समुद्र पर पुल का निर्माण कर दिया था। समर्पण से महान उपलब्धि मिलती है। अपने श्रद्धेय के प्रति समर्पण से सुख मिलता है। परमात्मा सबके परम श्रद्धेय हैं। इसलिए परमात्मा के प्रति समर्पण से परम सुख मिलता है। शांति का संचार होता है। जीवन सुखी तथा आनंदमय बनता है।

दो दिन पश्चात् युद्ध आरंभ की घोषणा हेतु शंखनाद होने से पूर्व कृष्ण ने अर्जुन से उसका धनुष-बाण मांगा। अर्जुन भौचक्का था क्योंकि कृष्ण ने युद्ध में शस्त्र न उठाने की प्रतिज्ञा ली थी। इस के अतिरिक्त अर्जुन को यह विश्वास था कि वह ही वहाँ सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर है।

"आज्ञा दें प्रभु" उसने दृढ़ विश्वास से कहा "मेरे बाणों के लिये कुछ भी अभेद्य नहीं है।"



अर्जुन से चुपचाप धनुष लेते हुए कृष्ण ने एक हाथी पर निशाना साधा। किंतु उस जानवर को मार गिराने के बजाए वह तीर उसके गले में लटकी घंटी पर लगा और चिंगारियाँ निकलीं।

कृष्ण को एक सरल सा निशाना चूकते देख अर्जुन अपनी हंसी रोक न सका।

"क्या, मैं करूँ?" उसने प्रस्ताव किया।
पुनः उसके प्रश्न एवं प्रतिक्रिया को अनदेखा करते हुए कृष्ण ने उसे उसका धनुष वापस कर दिया और कहा कि इसके आगे कुछ और करना आवश्यक नहीं है।

"किंतु केशव, आपने हाथी को क्यों निशाना बनाया?" अर्जुन ने पूछा।
"क्योंकि यही वह हाथी है जिसने उस पेड़ को गिराया था जिस पर उस गौरैया का घोंसला था।"
"कौन सी गौरैया?" अर्जुन ने आश्चर्य प्रकट किया "और वह हाथी सकुशल और जीवित है। केवल उसकी घंटी ही गिरी है।"
उसके प्रश्न की उपेक्षा करते हुए श्री कृष्ण ने उसे अपना शंख बजाने का आदेश दिया।

युद्ध शुरू हुआ और अगले अठारह दिनों में अनगिनत जीवन नष्ट हो गये। अन्त में पांडवों की विजय हुई। पुनः कृष्ण अर्जुन को लेकर रक्तिम युद्धक्षेत्र का निरीक्षण करने गये। वहाँ कई शव पड़े थे जिनका अंतिम संस्कार भी नहीं किया गया था। युद्ध-भूमि में कटे हुए सिर, हाथ-पैर, निर्जीव घोड़े व हाथी कूड़े करकट के समान पड़े हुए थे।

कृष्ण एक स्थान पर रुके और हाथी की एक घंटी को विचार मग्न होकर देखने लगे।

उन्होंने कहा "अर्जुन, क्या तुम मेरे लिये इस घंटी को उठाकर दूसरी ओर रख दोगे?"
यद्यपि आदेश सरल था किंतु अर्जुन को तात्पर्य समझ नहीं आया। आखिरकार इस विशाल युद्धक्षेत्र में जहाँ बहुत सी अन्य वस्तुओं को हटाने की आवश्यकता थी, कृष्ण ने उसे एक तुच्छ धातु के टुकड़े को हटाने के लिए क्यों कहा? उसने उन्हें प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा।



"हाँ, वह घंटी। यह वही घंटी है जो उस हाथी के गले से तब गिरी थी जब मैंने उस पर तीर चलाया था।"

बिना कोई प्रश्न किये अर्जुन उस भारी घंटी को हटाने के लिये झुका। जैसे ही उसने उसे उठाया उसका संसार सदा के लिये परिवर्तित हो गया।

एक, दो, तीन, चार, पाँच। चार छोटी चिड़िया एक के पीछे एक करके उड़ गयीं और उनके पीछे एक गौरैया थी। माँ चिड़िया कृष्ण के चारों ओर अत्यधिक प्रसन्नता में चक्कर लगाते हुए परिक्रमा करने लगी। वह एक घंटी जो कृष्ण ने अठारह दिनों पूर्व विभाजित की थी उसने चिड़िया के पूरे परिवार की रक्षा की।

"मुझे क्षमा करें कृष्ण" अर्जुन ने कहा "आपको मानव शरीर में साधारण मनुष्यों की भांति व्यवहार करते देख मैं भूल गया था कि आप सचमुच कौन हैं।"

कृष्ण ने गौरैया को युद्ध भूमि में ही छोड़ दिया था क्योंकि यह उसके भाग्य में पूर्व निर्धारित था। वह चिड़िया अपने बच्चों के साथ किसी सुरक्षित स्थान पर जाने की इच्छा भी प्रकट कर सकती थी। वह कृष्ण से उसे अपने साथ ले जाने के लिए भी तर्क कर सकती थी। वह विनती कर सकती थी कि उसे तीन सप्ताहों का भोजन प्रदान किया जाये। उसने इनमें से कुछ भी नहीं किया। उसने केवल निर्देशों का पालन किया तथा स्वयं को उनके हाथों में सौंप दिया जिस पर उसे विश्वास था। उससे जो प्रयास अपेक्षित था उसने उसका त्याग नहीं
गीता में बार-बार ईश्वर पर पूर्ण रूप से विश्वास कर खुद को उन्हें सौंप देने की बात कही गई है। अतः मनुष्य को ईश्वर की भक्ति में पूर्णतः खुद को समर्पित कर देना चाहिए, जो भी हो रहा है उसे उनकी ही इच्छा मानकर उनका नाम जपना चाहिए। ऐसा करने वाला मनुष्य संसार के समस्त पापों से मुक्त हो ईश्वर के कृपा का पात्र बनता है और उसके सभी पापों का नाश होता है।

स्वयं (अपने आपको) भगवान् के अर्पित करना कि मैं भगवान् का ही हूँ और भगवान् ही मेरे हैं। स्वयं को भगवान् के अर्पित करने से नाम-जप, चिन्तन, ध्यान, सेवा-पूजा, आदि तथा शास्त्रनिहित कर्म मात्र स्वतः भगवान् के लिए ही

होती हैं।

शरीर प्रकृति का और जीव भगवान् (परमात्मा) का अंश है। प्रकृति के कार्य शरीर, इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि और अहम् से तादात्म्य, ममता और कामना न करके केवल भगवान् को ही अपना मानने वाला यह कह सकता है कि 'मैं भगवान् का हूँ और भगवान् मेरे हैं।' जैसे की चिड़िया ने स्वयं को अपने बच्चोंसहीत भगवान श्रीकृष्ण को सम्पूर्ण विश्वाससे समर्पित कर दिया था।

रात्री के बाद निश्चीत सूर्योदय होना है यह सम्पूर्ण जगत का विश्वास। कीचड़ में उगते कमल को भगवद् चरणों में स्थान मिलना है यह विश्वास। गोपियोंको कृष्ण के प्रति अनुरागी विश्वास। संत सज्जनों को भगवद् भक्ति लिनता से मोक्ष प्राप्ति का विश्वास। संशय को विश्वास की असत्य की हार निश्चित है।

यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम् ।
असंमूढ: स मर्त्येषु सर्वपापै: प्रमुच्यते ।।3।।

इस श्रीमद्भगवदगीता के अद्याय 10 के 3 रे श्लोक कोवर्तमान परिप्रेक्ष्य में समझा जाए तो जो भी हो रहा है उसको भगवान की इच्छा जानते हुए उसको स्वीकार करते हुए अनुशासन में रहें व उसकी सत्ता को सर्वोपरि मानें। भगवान अजन्मा है। वह समय समय पर पकृति को संतुलित भी करता है। यदि हम अनादि भगवान की सत्ता में पूर्ण विश्वास करते हुए उसे ही सब कारणों का कारण जानकर उनकी भक्ति करें तो भय व दु:ख से मुक्ति मिलती है तथा समस्त पापों का भी नाश होता है।

निस्वार्थ भाव के साथ व सम्पूर्ण श्रद्धा से कर्म सर्वशक्तिमान परमेश्वरको अर्पण करनाही समर्पण है

समर्पण से ही परमात्मा सहाय बनते हैं। मीरा ने समर्पण यह कहकर कि 'मेरो तो गिरधर गोपाल बस दूसरो न कोई' किया तो मीरा को पिलाया जाने वाला जहर परमात्मा ने अमृत में बदल दिया। द्रौपदी ने हार थक कर जब अंत में केवल और केवल श्रीकृष्ण को समर्पण किया तो भगवान श्रीकृष्ण ने उनका चीर हरण नहीं होने दिया। समर्पण। राजा जनक ने अष्टावक्र ऋषि के प्रति समर्पण किया तो राजा जनक को तत्क्षण ज्ञान हो गया। रामकृष्ण परमहंस के प्रति बालक नरेंद्र का, जो कि बाद में स्वामी विवेकानंद के नाम से जाने गए, समर्पण हुआ तो काली मां उनके हृदय में प्रकट हो गई।

महाभारत युद्ध के दौरान अपने आपको स्वावलंबी समझ अर्जुन योगेश्वर श्रीकृष्ण भगवान के प्रति समर्पण को भूले तो धनुर्धारी अर्जुन के तीर चलने रुक गए। अर्जुन ने पीछे मुड़कर श्रीकृष्ण को निहारा। श्रीकृष्ण बोले 'चलाओ तीर।' अर्जुन सब कुछ समझते हुए बोले, 'भगवान भूल हो गई थी।' भगवान के प्रति अर्जुन का समर्पण भाव बना तो पुन: तीर चलने आरंभ हो गए। त्रेतायुग के अवतार भगवान श्रीरामचंद्र के प्रति भक्त हनुमान के समर्पण से हनुमान को इतनी शक्ति प्राप्त हो गई थी कि उन्होंने समुद्र पर पुल का निर्माण कर दिया था। समर्पण से महान उपलब्धि मिलती

Crossword Questions

Across

1. सर्वज्ञ कौन है ?
3. श्रीकृष्ण अर्जुन के साथ युद्धभूमि क निरीक्षण किस विचार से करने गए ?
5. सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर को अपने बाणों पर कैसा विश्वास था ?
7. चिड़िया के लिए श्रीकृष्ण क्या थे ?
11. ईश्वर भक्ति में पूर्णतः स्वयं को अर्पण कर देना।
12. गोरैया किस शास्त्र से अनजान है ?
16. कृष्ण के शंख का नाम, जिससे शंखनाद करके महायुद्ध का आरंभ हुआ था ?
18. किस भाव से संपूर्ण कर्मो का नियोजन होना चाहिए ?
20. महाबली हनुमान जी का विशेषण !
22. अर्जुन के धनुष का नाम ?
24. महाभारत के महायुद्ध को यह कहा गया !
26. काली मां इनके हृदय में प्रकट हुई।

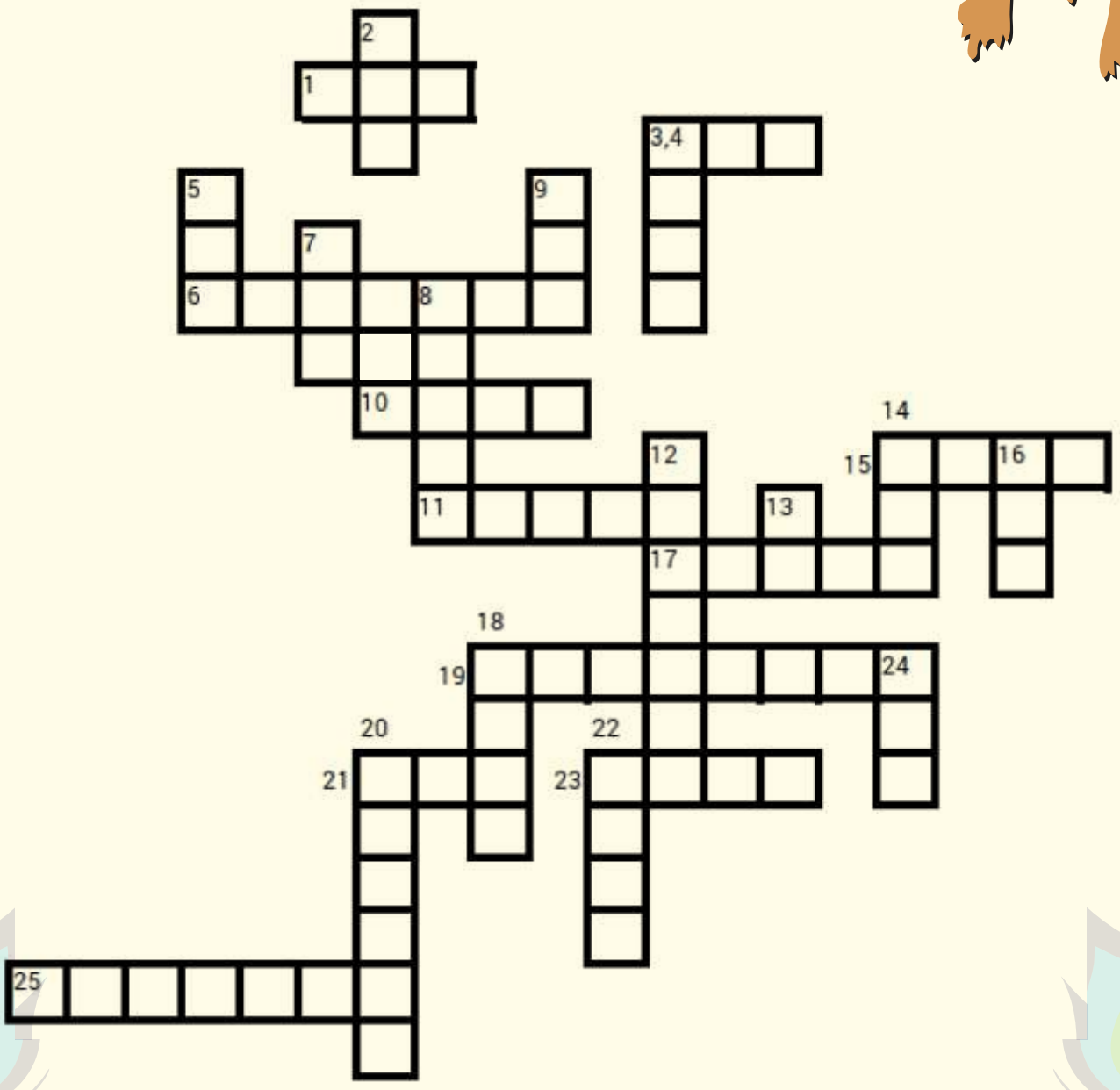
Down

2. श्रीकृष्ण किसके नियम में नहीं बंधते ?
4. कौरवों और पांडवों की सेना को क्या कहते थे ?
6. चिड़िया ने भगवान श्रीकृष्ण पर जताया ?
8. भाग्य का पर्यायवाची शब्द !
9. मोक्षप्राप्ती से क्या मिलता है ?
10. चिड़िया को कौनसे नाम से पुकारा जाता है ?
13. नाम-जप, चिन्तन, सेवा, ध्यान.. इनको क्या कहा गया है ?
14. श्रीकृष्ण अर्जुन को क्या कहकर पुकारते थे?
15. कुंतीपुत्र
17. पानी में खिलता कमल
19. राजा जनक जी ने इन ऋषि के प्रति समर्पण भाव रख, ज्ञान प्राप्त किया।
21. 100 कौरव
23. कुरुक्षेत्र की पहचान
25. महायुद्ध के अठारह दिन गोरैया को अपने परिवार सहित इसके गले की घंटी, (जो कि भगवान श्रीकृष्ण ने उसके गले से निकाल युद्धभूमि में गिराई थी), के नीचे आश्रय मिला था।



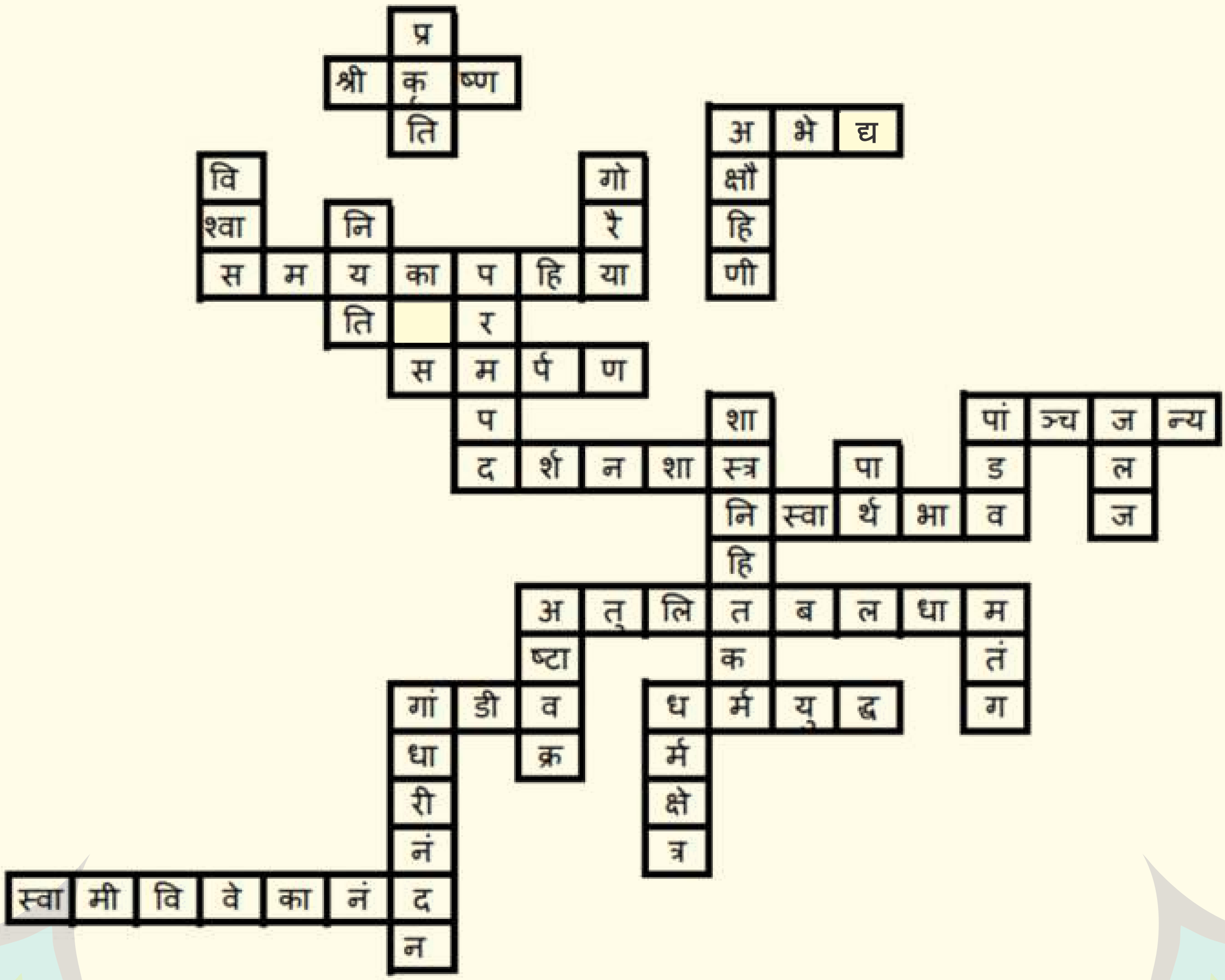
Crossword Puzzle





Crossword Answers





मिलान करें

नीचे श्लोक एवं अध्याय क्रमांक दिए हैं आपको सभी श्लोकों के सही अध्याय क्रमांक का चुनाव करना है –

श्लोक	अध्याय क्रमांक
न मे भक्तः प्रणश्यति	2.38
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्	3.43
सुखदुःखे समे कृत्वा	6.14
जहि शत्रुं महाबाहो	10.15
संभवामि युगे युगे	11.46
पण्डिताः समदर्शिनः	12.11
युक्त आसीत मत्परः	5.18
देवदेव जगत्पते	2.7
सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते	9.31
सर्वकर्मफलत्यागं	18.66
मामेकं शरणं व्रज	16.22
ततो याति परां गतिम्	4.8

मिलान करें (उत्तर)

श्लोक	अध्याय क्रमांक
न मे भक्तः प्रणश्यति	9.31
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्	2.7
सुखदुःखे समे कृत्वा	2.38
जहि शत्रुं महाबाहो	3.43
संभवामि युगे युगे	4.8
पण्डिताः समदर्शिनः	5.18
युक्त आसीत मत्परः	6.14
देवदेव जगत्पते	10.15
सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते	11.46
सर्वकर्मफलत्यागं	12.11
मामेकं शरणं व्रज	18.66
ततो याति परां गतिम्	16.22

पात्र की पहचान करें

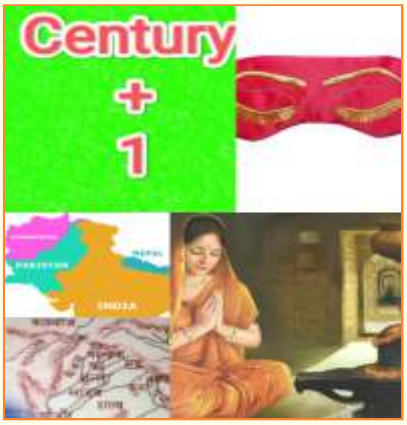
चित्रों एवं संकेतों के आधार पर पात्र को पहचानें -

(क) उत्तर .....



1. कृष्ण के भाई हैं
2. मल्लयुद्ध में प्रवीण थे
3. वे हलधारी थे
4. शेषनाग के अवतारी थे

(ख) उत्तर .....



1. उनके सौ पुत्र और एक पुत्री है
2. उन्होंने आंखों में पट्टी बांधी है।
3. वे गांधार की राजकुमारी थी
4. वे शिव जी की भक्त थी

(ग) उत्तर .....



1. बामन, राम एवं कृष्ण तीन अवतारों के दर्शन किये।
2. वे तीन युगों में जीवित थे
3. स्यमंतक मणि के लिये श्री कृष्ण एवं जामवन्त में नंदिवर्धन पर्वत (तत्कालीन नाँदिया, सिरोही, राजस्थान) पर २८ दिनो तक युध्द चला।
4. जामवन्त को ऋक्षपति कहा जाता है। जिसका अर्थ होता है भालू अर्थात भालू के राजा।

(घ) उत्तर .....



1. चक्रव्यूह में अभिमन्यु के वध में मुख्य स्थान रहा
2. परशुराम से शिक्षा प्राप्त की
3. उनका नाम कान से संबंधित है
4. वे सूर्य के पुत्र हैं

(ड़) उत्तर .....



1. धरती से जन्म हुआ
2. तोते का श्राप मिला था
3. स्वर्ण मृग की इच्छा के कारण समस्या हुई
4. इनके दो पुत्र हुए

उत्तरमाला : (क) बलराम, (ख) गांधारी (ग) जामवंत (घ) कर्ण, (ड़) सीता

Volunteers' Brigade

PATRON
P.P. SWAMI JI SHRI GOVINDDEV GIRI JI MAHARAJ

CONCEPT CHIEF
Dr. Sanjay Malpani

PROGRAM DIRECTOR
Dr. Ashu Goyal

PRINCIPAL TRAINER
Smt. Suvarna Malpani, Sangamner

PROGRAM COORDINATORS
Ms. Jyoti Shukla
Ms. Rupal Shukla
Ms. KavitaVerma

TRAINER'S TRAINING DEPARTMENT
Smt. Vijaya Godbole, Dehradun
Shri Shrinivas Warnekar, Nagpur
Sau. Vandana Warnekar, Nagpur
Sau. Anita Sangamnerkar, Ayodhya
Shri Vikas Vaidya, Pune

IT & SOFTWARE DEPARTMENT
Shri Pradeep Rathi, Pune
Shri Gagan Holani, Mumbai
Shri Ashish Tiwari, Chitrakoot
Shri Vivek Sinha, USA
Shri Vednath Mathur, Delhi
Smt. Minaxi Shah, Ahmedabad
Shri Manish Tomar, Morana
Shri Mitesh Khatri, Bikaner
Shri Pankaj Agarwal, Lucknow

TRAINER MANAGEMENT DEPARTMENT
Shri Vivek Vij, Moga
Smt. Sheetal Salke, Pune
Smt. Anita Ravishankar, Pune
Smt. Manisha Bardhan, Lucknow
Smt. Shruti Nayak, Mumbai
Shri Meennath Narayan Lakhote, Bhandara
Smt. Mansi Ekbote, USA

CREATIVE WRITING DEPARTMENT
Shri Vimal Jain, Calcutta
Smt. Usha Prashad, Bengaluru
Shri Swaminathan, Nasik

TECHNICAL ASSISTANT DEPARTMENT
Shri Suraj Sharma, UAE
Smt. Vijaya Muchhal, USA
Shri Narendra Kotak, Pune
Smt. Manisha Bharadwaj, Abu Road
Shri Dinesh Chawla, Chennai
Smt. Alaknanda Kulkarni, Pune
Smt. Shraddha Srivastava, Banglore
Shri Nitin Bhutra, Erode

LITERATURE PUBLICATION DEPARTMENT
Smt. Pooja Goyal, Lucknow (Compilation)
Shri Valiveti Venkata Lakshmi Narayana Sharma, Visakhapatnam (Telugu)
Shri Suresh Kumbhar, Ugar BK (Kannada)
Smt. Shruthi Kadagaonkar, Pune (Kannada)
Smt. Anupama Patil, Goa (Kannada)
Shri Gopalratnam, Tiruchirapalli (Tamil)
Smt. Banusuja R. krishnan, Los Angeles (Tamil)
Shri Swaminathan, Nasik (Tamil)
Smt. Ramesh Kumar Rateria, Calcutta (Bangla)
Shri Pramod Barik, Malkangiri (Odia)
Smt. Mala Narayana, Coonoor (Malayalam)
Smt. Rani Ramdas, USA (Malayalam)
Ms. Hiral Patel, Satara (Gujarati)
Smt. Tarun Gogoi, Dibrugarh (Assamese)
Shri Narayan Shete, Coimbatore (Grammar)

GROUP COORDINATORS DEPARTMENT
Smt. Kavita Taparia, Ahmedabad
Smt. Smita Mundada, Pune
Smt. Saroj Saboo, Hyderabad
Smt. Nisha Keny, Mumbai
Shri. Hanuman Prasad Baheti, Aurangabad
Smt. Vini Maheshwari, Mumbai
Shri Sunil Kapdi, Mumbai
Shri Dinesh Pandita, Delhi

EXAMINATION DEPARTMENT
Shri Arun Taparia, Lakhimpur Khiri
Shri Hemant Parmar, Mumbai
Shri Santosh Singh, Indore

BACK OFFICE DEPARTMENT
Shri Nilesh Pathade, Sangamner
Shri Datta Bhandurge, Sangamner
Ms. Vaishnavi Raj Sahu, Lucknow
Ms. Janhvi Raj Sahu, Lucknow
Shri Khitish Mohapatra, Sangamner

TELE, CHAT & MAIL HELPLINE DEPT.
Shri Siddharth Havelia, Delhi
Smt. Sarika Dhaundiyal, Delhi
Ms. Priya, Delhi
Ms. Geet, Delhi
Ms. Kajal Srivastava, Delhi

GROUP/SCHOOL REG. DEPARTMENT
Smt. Anshu Garg, Delhi

LEGAL DEPARTMENT
Smt. Priyanka Havelia, Delhi

CLASS MONITORING DEPARTMENT
Smt. Shraddha Raodeo, Hyderabad
Smt. NamitaMehra, Mumbai
Smt. Anjali Joshi, Mumbai
Smt. Renu Chaudhary, Hyderabad

CHINTANIKA COORDINATORS
Smt. Nirmala Maru, Kota
Shri Harinarayan Vyas, Hyderabad
Smt. KavitaMandhane, Parbhani

VIVECHAN COORDINATORS
Shri Gopal Singh Nathawat, Bikaner
Smt. Neeta Aspat, Mumbai
Shri Suresh Vyas, Bikaner
Shri Deepak Gupta, Kota
Shri Sunil Dhoot, USA

GEETA PRACHARAK COORDINATORS
Shri Geet Govind Sahu Jagdalpur
Shri Suresh Dadhich, Mumbai

ADMISSION DEPARTMENT
Smt. Minal Dani, Bangalore
Ms. Bhagyashri Pawnikar, Chhindwara
Shri Bhavnesh Gandhi, Mumbai

CALLING & MIGRATION DEPARTMENT
Smt. Punita Prasad, Chennai
Smt. Yogita Khinda, Mumbai
Shri Mahesh Shewale, Mumbai

साधक मनोगत



সৌভাগ্যক্রমে গীতা পরিবারের ব্যাপারে জানতে পারি এবং গীতা পাঠ কঠিন ভেবে সারা জীবন চেষ্টা করিনি, কিন্তু এখানে যোগ দেওয়ার পর বুঝতেই পারলাম না কখন ১৬ টা অধ্যায় পাঠ হয়ে গেছে। সবচেয়ে ভালো লেগেছে এক লেভেল উপরের ছাত্রর নীচের লেভেল কে পড়াচ্ছেন। দারুন সিস্টেম। আমি পশ্চিম বঙ্গের সরকার কে এই অদ্ভুত পড়ানোর পদ্ধতির ব্যাপারে জানানোর চেষ্টা করবো।

Ashok Agarwala, Siliguri



गीता परिवार के साथ जब से जुड़ा इस भजन का मतलब सार्थक लगने लगा "कि जैसे जलते हुए तन को मिल जाये तरुवर की छाया"। अद्भुत बदलाव अपने जीवन में अनुभव किये। मन का भटकाव कम हुआ। सोते हुए भी अपने अंदर श्लोक चलते से महसूस होते हैं। वाणी में शुद्धता का संचार हुआ है। गीता परिवार का सदा ऋणी रहूँगा।

Umesh Bhaskar, New Delhi



Service, knowledge, community, rhythm, punctuality, sincerity, clarity, practice, commitment...are few words that come to mind when i think of Geeta pariwar.

Eswarachar Manohar, Bengaluru Urban



प्रवास हा चारधाम यात्रेचा, प्रत्यक्ष श्रीकृष्ण कृपेचा अनमोल साथ गीता परिवाराच्या विद्वत्तांची, निःस्वार्थ सेवाभावाची,ज्ञानार्जन करणाऱ्या गुरूंची मंत्रमुग्ध करणारा सुवर्णाकाकींचा सुमधुर, सुरेल आवाज करी कृष्णमय वातावरण,देई आनंद आणि प्रसन्नता मनास चाहूल अर्थ विवेचनांची, संजयजी आणि आशुजींच्या ओजस्वी वाणीची पर्वणी एकादशीच्या गीता चिंतनीकांची, प्रगल्भ विचारांची तंत्रज्ञानाने गीता पोहोचली सातासमुद्रापार, सार्थ झाले हे विश्वची माझे घर ध्येय आहे गीता जीवनात उतरवण्याचे, जीवनाला सुयोग्य मार्ग दाखविण्याचे, मनुष्य जन्म सार्थकी लावण्याचे.

Sneha Pandurang Bhatgaonkar, Nashik





2021 ಜನುವರಿಯಿಲಾಣ್ "ಭಗವದ್ ಗೀತ ಸೌಜನ್ಯಮಾಯಿ ಪಠಿಕ್ಕುಕ" ಎನ್ನ ಲಿಙ್ಕ್ ಎನಿಕ್ಕ್ ಲಭಿಚ್ಚತ್! ಅತ್ ಸ್ವತನ್ತ್ರಮಾಯ ಚಿನ್ತಯಾಯತಿನಾ ಎನಿಕ್ಕ್ ಕುರಚ್ಚ್ ಅರಿವ್ ನೇಟಾನುಂ ಆತ್ಮೀಯ ಜೀವಿತತ್ತಿಲೇಕ್ಕ್ ಪ್ರವೇಶಿಕ್ಕಾನುಂ ಕಳಿಯುಂ, ತುಡ ನ್ ಞಾ ರಜಿಸ್ಟ್ರ ಚೆಯ್ತ್, ಎಲ್ಲಾ ರೆಗುಲ ಕ್ಲಾಸುಕಳಿಲುಂ ಪಙ್ಕೆಡುಕ್ಕುಕಯುಂ ಒರುಪಾಟ್ ಆಸ್ವದಿಕ್ಕುಕಯುಂ ಚೆಯ್ತು. ಕುರಚ್ಚ್ ದಿವಸಙ್ಙ ಕ್ಕ್ ಶೇಷಂ ಞಾ ಗೀತಾ ಪರಿವಾರಿ ಒರು ಸನ್ನಧ್ರವ ತ್ತಿಕಯಾಯಿ, ಒರು ಟೀಮಿನೆ ಎಙ್ಙನೆ ಕೈಕಾರ್ಯಂ ಚೆಯ್ವಾಂ, ಮ್ಯದುವಾಯ ಸಂಸಾರಂ, ತುಡಙ್ಙಿ ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವಪರಮಾಯ ನಿರವಧಿ ಕಾರ್ಯಙ್ಙ ಪಠಿಕ್ಕಾ ಕಳಿಞ್ಞು.ಕೂಡಾತೆ, ಇತ್ ಎನ್ರೆ ಜೀವಿತತ್ತಿಲೆ

Priya Agarwal, Dewas Kannad



ಸುಮ್ಮಾರು ೭೨(72) ವರ್ಷಗಳ ಮುಂಪಾದಲ್ತೇ ಶಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಸಂಸ್ಕೃತದ ಸಂಗಡ ವಿದ್ವಾನ್ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣರು ಗೀತೆಯನ್ನು ಕಲಿಸುತ್ತಿದ್ದರು, ೨ ಮತ್ತು ೩ನೇ ಅಧ್ಯಾಯ.ಶಾಲೆ,ಕಾಲೇಜು,ಹೆಚ್ಚಿನ ತಾಂತ್ರಿಕ ವಿದ್ಯೆ ಕಲಿಯುವಿಕೆ, ಉದರನಿರ್ವಾಹಕ ಕರ್ತವ್ಯ, ತಂದೆಯ ಸೇವೆ, ತಾಯಿಯ ಚಿಕ್ಕವನ ರುವಾಗಲೇ ಕೈಲಾಸವಾಸಿಯಾದರು. ಬಂಧುಭಗಿನಿಯರ ಉನ್ನತಿ, ಸ್ವಂತ ಸಂಸಾರದ ನಿರ್ವಹಣೆ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಸ್ವತಂತ್ರ ಮಾರ್ಗಕ್ಕೆ ಹಚ್ಚುವುದು, ಇದ್ದಲ್ಲೆ ಸ್ವಧರ್ಮ ಮಾಡಲೇಬೇಕೆಂದು ತನ್ನನ್ನೂ ಬಿಡದೆ ಮಾಡಿಸುಕೊಳ್ಳುವ ದಲ್ಲದ ಒಂದೂವರೆ ವರ್ಷದ ಹಿಂದೆ ನನಗೆ ತನ್ನನ್ನು ಸಖಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನನ್ನು ತೋರಿಸಿ ಇವನು ಹೇಳಿದಂತೆ ಇಂದೆನ್ನಿದು, ಇದನ್ನೂ ಮಾಡೆಂದು, ಅಂದು ಆಜ್ಞೆ ಮಾಡಿದ. ನಾನು ತನ್ಮಯನಾಗಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ ಹೇಳಿದಂತೆ ಅವನ ಗೀತಾ ಪರಿವಾರದಲ್ಲಿದ್ದು ಅವನು, ತುಂಬ ಸ್ತಬ್ಧಪರಿಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿದ್ದ ಅವನ ಕೇವಲ ಸಖಿ ಅರ್ಜುನನ್ನು ಹೇಗೆ ಸರಿದಾರಿಗೆ ತಂದ ಎಂಬುದನ್ನೆಲ್ಲದರ ಮಾರ್ಗ ನನಗೆ ತೋರಿಸಿ, ಕಲಿಸಿ, ಮಾಡಿದನಲ್ಲದೆ ಅವನ ಉಳಿದ ಭಕ್ತರನ್ನೂ ಸಹ ಈ ಮಾರ್ಗಕ್ಕೆ ಬರಲು, ಚನ್ನಾಗಿ ಕಲಿಸಿ ತಿಳಿಸಿದ. ಬೇರೆ ಎಲ್ಲ ಕಡೆಗಣಿಸಿ, ಮರೆತು, ಈಗ ನನ್ನನ್ನು ಅತಿ ಪ್ರೀಯನಾದ ಭಗವಾನ್ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ ಸಖಿ ತೋರಿಸಿದ ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ, ಅವನ ಕೈಲ್ ಹಿಡಿದುಕೊಂಡು. ಅವನಿಗೆ ನಾನು ಅತ್ಯಂತ ಪ್ರೀಯನಾಗಿ ಅವನ ಸ್ವಂತ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಕೈಲಿಡುವ ಶಕ್ತಿ ಬರುವಷ್ಟು ಸಾಧನೆ ಸತತವಾಗಿ ಮಾಡಲು ಪ್ರಯತ್ನಿಸುತ್ತಿದ್ದೇನೆ. ಎಲ್ಲದಕ್ಕೂ ಕಾಲಕೂಡಿಬರಬೇಕೆಂದು ಅವನೇ ಹೇಳುತ್ತಿದ್ದಾನೆ. ಜಯ ಶ್ರೀ ಕೃಷ್ಣ.

Ramachandra Kulkarni, Mumbai





જ્યારેlockdownનાકારણેમનનેકંટાળો શાંતનિાહતીબધાલોકોવ્યાકુળહતાઅનેહુંપણ . શુકરવુંwork from home પણસમયપસા ર કર વો એ ટ લે મા થા નો દુ ખા વો , એ વા સ મ ય પ ર ગી તા પ ર વિા ર online ભગવદગીતાસૅથાclasses લાવ્યુંજે . ખરેખરસમયનસદુપયોગમાટેનુંસાધનબનીગયો.

Narendra Gadhav, Gandhidham



జై శ్రీ కృష్ణ. గీతా పరివార్ లో నెలరోజుల కిందజాయిన్ అయినా ను. లెవల్ వన్ లో ఉన్న పుడు టెక్నికల్ అసిస్టెంట్ గసెలక్ట్ అయినాను. నాకు చాలా సంతోషంగా ఉంది పరివార్తో కలిసి నా సేవలు అందించడం. ఎంతో మంది గీతా పరివార్ లో అనేక రకాల వారి వారి అమూల్యమైన సమయం పెట్టి మనందరం ఆ పరమాత్మ అందించిన భగవద్గీతను నేర్చుకోవాలని తాపత్రయ పడుతున్నారు. ఇందుకు మనందరం కృతజ్ఞతలు చెప్పాలి.నేను ఈ పవిత్రమైన పనిలోసేవికగా ఉండడం నా పూర్వజనమ సుకృతం. నమస్కారం తోఅరుణ పలెపాటి

Aruna Pallepati, Secunderabad



"ଗୀତାପରିବାର" ସଂସ୍ପର୍ଶରେ ଆସି ମୁଁ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଆନନ୍ଦ ଅନୁଭବ କରୁଛି । ସଂସ୍କୃତରେ ଲିଖିତ କଠିନ ଶ୍ଲୋକ ଗୁଡିକର ଉଚ୍ଚାରଣ ଏତେ ସହଜ ଏବଂ ସରଳ ଭାବରେ ବୁଝାଯାଇ ପାରେ ଏହା ମୁଁ ଗୀତାପରିବାର ସହ ଜଡିତ ହେଲାପରେ ଜାଣିପାରିଲି । ଶୁଦ୍ଧ ବ୍ୟାକରଣକୁ ଆଖି ଆଗରେ ରଖି ପ୍ରସ୍ତୁତ କରାଯାଇଥିବା p d f. ଅତ୍ୟନ୍ତ ପ୍ରଶଂସନୀୟ ତଥା ଶିକ୍ଷଣୀୟ । ସମସ୍ତ ଶିକ୍ଷା ବ୍ୟବସ୍ଥା ଏଠାରେ ଅତି ଶୃଙ୍ଖଳିତ ତଥା ଆଧୁନିକ ବୈଷୟିକ ପଦ୍ଧତିରେ ଉଚ୍ଚ ଶିକ୍ଷିତ ବ୍ୟକ୍ତିବିଶେଷ ମାନଙ୍କ ଦ୍ୱାରା କରାଯାଉଛି । ଏପରି କାର୍ଯ୍ୟ କେବଳ ଈଶ୍ୱରଙ୍କ ଇଚ୍ଛାର ହିଁ ପରିପ୍ରକାଶ ମାତ୍ର । ଯେତେବେଳେ ମୁଁ କାର୍ଯ୍ୟସହାୟକ ରୂପେ ସେବା ଦେବାର ସୁଯୋଗ ପାଇଲି ସେତେବେଳେ ମୋତେ ମନେହେଲା ସତେ ଯେମିତି ଏକ ବିଶାଳ ସତସଙ୍ଗ ସାଗରରେ ମୁଁ ଆନନ୍ଦରେ ଭାସୁଛି । "ଗୀତାପରିବାର" ବ୍ୟକ୍ତିର ଭୌତିକ ଜୀବନକୁ ରୂପାନ୍ତରିତ କରି ବ୍ୟାପକ ଆନନ୍ଦଦାୟୀ ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକ ଜୀବନରେ ପରିବର୍ତ୍ତନ କରିବାର କ୍ଷମତା ରଖେ । ଏଥିପାଇଁ "ଗୀତାପରିବାର" ନିକଟରେ ମୁଁ ଚିର ଋଣୀ । ଜୟ ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ ଜୟ ଜଗନ୍ନାଥ ।

Manoj Kumar Sahu, Talcher

गीताव्रती सूची


A. V. Adhya


Aaradhya Pramod Bhide


Aarav Mukund Laddha


Adhishree Rameshwar Gattani


Adhrit Vijay


Alka Avinash Markandeya


Alka Nimje


Alpa Manohar Kokate


Amit Vijay


Amogh Amit Chava


Amruta Shrikant Walsetwar


Anagha Linge


Anita Billaiya


Anuja Jayant Pingle


Anuja Lahoti


Anuradha Balkrishna Kulkarni


Anuradha Deepak Karwa


Anuradha Yashwant Kulkarni


Aparna Ashok Mehendale


Aradhya Hiitesh Sharma


Archana Anil Rane


Archana Rajkumar Waghchawre


Ashish Satyanarayan Mundada


Ashwini Aanat Kondo

गीताव्रती सूची





Ashwini Shrikant Joshi



Basanta Kumar Baral



Bhalerao Vidya Jayant



Bhaskar Baburao Sarode



CA Bhushan Toshniwal



Chhaya Avinash Padwal



Dattatraya Ramesh Choudekar



A. V. Adhya



Deoram Ganpat Dumbre



Devadatta Chandgadkar



Devansh Kalantri



Deven Vijay Albal



Dhananjai Jagannath Gokhale



Dhveej Dwarkesh Gandhi



Dilip Ramrao Kate



Dr Anita Goel



Dr Aparna Holkundkar



Dr Manjiri Malekar



Dr Nilima Ansingkar



Dr Pratixa Bhatt



Dr Trupti Dinesh Keny



Durga Pugalia



Dwarka Prasad Gaggar



Ekta Daga

गीताव्रती सूची





Ganga Gopal Kabra



Gangadhar Pandurang Jaiwal



Geeta Mayur Shah



Geeta Sarda



Gunjan Sanjay Neralkar



Hansika Kabra



Hema Badrinarayan Laddha



Hrishikesh Joshi



Jaya Santosh Kamathe



Devadatta Chandgadkar



Jayashree Sureshchandra Bhosale



Jayashri Satish Gijare



Jyoti Nilay Mahajan



Kalpana Vijayji Kabra



Kamal Sitaram Mahajan



Kanchan Sunil Pathak



Kapil Prashant Savargaonkar



Kashmira S Upadhyaya



Kasturi Bai



Kavita Singi



Kirti Pritam Bhutada



Krupa Bhavinkumar Popat



Kshama Dhananjay Gokhale



Kulkarni Jyoti Ravindra

गीताव्रती सूची





Kunjal Ankit Shah



Lalitha Jagadeesh



Leela Ramesh Waghmare



Leena Shah



Madhuri Manoj Mainkar



Mahesh Anerao



Mamta Maheshwari



Mangal Mundada



Mangala Shankar



Manika Periwal



Manisha Gandhi



Manisha Kawale



Manisha Mohan Abhyankar



Manju Sikariya



Meena Arjun Padwal



Minakshi Gandhi



Mohini Digambar Deshpande



N.S. Tapas



Nalini Kulkarni



Nalini Patil



Nanda Pandilwar



Nanda Vijay Padegaonkar



Nandini Deshmukh



Nandini Santosh Pimparkar

गीताव्रती सूची





Neela Kishor Bhat



Neelima Milind Panse



Neha Amol Kabra



Nikhilesh Narendra Pant



Nisha Jain



Om Sudhir Chidrawar



Om Prakash Vaishnav



Paliwal Raj Jitendra Kumar



Pankita D Solanki



Parvati Rajendra Kad



Patel Alpa Manishbhai



Poonam Sachin Mundada



Poorva Hemant Albal



Prachi Dattatray Kulkarni



Pragati Parkar



Pratibha Sarang Sabnis



Prerana Ashish Mundada



Priti Inani



Priya Agrawal



Pushpa Ladha



Puspakant Ranchhodbhai Patel



Radhika Sagar Kulkarni



Ragini Nagarkar



Ragini Velankiwar

गीताव्रती सूची




Ramanand Ravin Jugade


Ramya B


Ratna Subhash More


Rekha Madhukar Pusalkar


Renuka Pramod Joshi


Reva Shirish Joshi


Revansh Maheshwari


Rohini Sudhir Narayan


Rupali Shailesh Pathak


Sadichha Vikas Salunke


Sandhya Borse


Sangita Anil Mundada


Saniha Ravi Shetty


Saranga Raghuwanshi


Sarita Madhav Godse


Saroj Sultania


Sarswati Mundhra


Saumitra Satvik Abhisheki


Savita Dalmia


Seema Saraf


Seema Sudheer Padmawar


Shaila Kailas Parashar


Sham Haribhau Panse


Shamala Palsuledesai

गीताव्रती सूची




Shantala Satish Patil


Sharan Sweta Pulipati


Sheetal Gupta


Shobha Taori


Shraddha Nadkarni


Shreeya Vishalkumar Naik Desai


Shrihari Shrikrushna Tidke


Shrirang Patil


Shrungeri Sundar Kulkarni


Shubhada Satish Godbole


Shubhada Sudhir Deo


Shyamlata Laddha


Smita Mehta


Soham Narsinhrao Panchal


Sonalben Kiritkumar Patel


Soniya Vijay


Subhash Madhav Bhirud


Sunil Kumar Soni


Sunita Pansari


Suvarna Anvikar


Swati Hurkat


Sweta Somani


Tanay Amol Kabra


Tanisha Lara

गीताव्रती सूची





Thonongi Geetha



Vaishali Vijay Shreewastao



Varsha Kiran Polawar



Varsha Mundra



Varsha Shrirang Galgali



Vasudha Kulkarni



Vidya Lakshmi



Vijaya Godbole



Vimal Ganesh Ingale



Vinaben Pinakin Jani



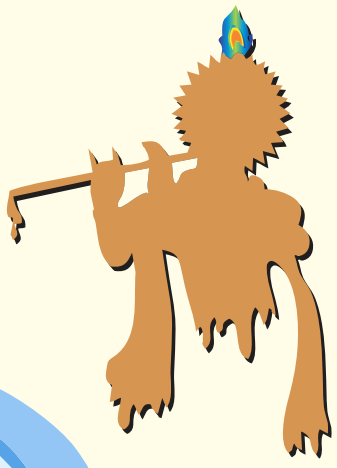
Vinod Kumar Agarwal



Vinod Vinayak Patil



आंकड़ों के नजर में



Extra Classes

Gīta Guñjan - **76**
Gīta Jijñasu - **64**
Gīta Pāthak - **72**
Gīta Pathik - **98**
Gīta Vratī - **34**

Grammar Sessions

Hindi - **15**
English - **11**

Geeta Sewi Volunteers across the globe **4,500**

Registered Participants from **131** Countries **4,18,322**

Geeta Classes Conducted yet **2,21,534**

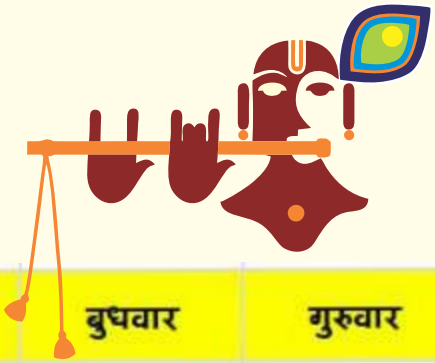
Total Passed in Examination

Gīta Jijñasu - **4,319**
Gīta Pāthak - **1,545**
Gīta Pathik - **629**
Gīta Vratī - **187**

Total Vivechan Session

Hindi - **512**
English - **152**

सितम्बर 2022



रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
प्रतिपदा (शुक्ल) 1 28	द्वितीया (शुक्ल) 2 29	तृतीया (शुक्ल) 3 30	चतुर्थी (शुक्ल) 4 31	पंचमी (शुक्ल) 5 1	षष्ठी (शुक्ल) Aug L3 Welcome Ceremony (2nd Batch) 6 2	सप्तमी (शुक्ल) 7 3
अष्टमी (शुक्ल) Gita Jijñasu Exam 8 4	नवमी (शुक्ल) 9,10 5	एकादशी (शुक्ल) परिवर्तिनी एकादशी 11 6	द्वादशी (शुक्ल) 12 7	त्रयोदशी (शुक्ल) 13 8	चतुर्दशी (शुक्ल) 14 9	पूर्णिमा 15 10
प्रतिपदा (कृष्ण) Gita Pathak Exam 1 11	द्वितीया (कृष्ण) 2 12	तृतीया (कृष्ण) 3 13	चतुर्थी (कृष्ण) 4 14	पंचमी (कृष्ण) 5 15	षष्ठी (कृष्ण) 6 16	सप्तमी (कृष्ण) 7 17
अष्टमी (कृष्ण) Gita Pathik Exam 8 18	नवमी (कृष्ण) 9 19	दशमी (कृष्ण) 10 20	एकादशी (कृष्ण) इन्दिरा एकादशी 11 21	द्वादशी (कृष्ण) 12 22	त्रयोदशी (कृष्ण) 13 23	चतुर्दशी (कृष्ण) 14 24
अमावस्या 15 25	प्रतिपदा (शुक्ल) Sep L2 Welcome Ceremony 1 26	द्वितीया (शुक्ल) 2 27	तृतीया (शुक्ल) 3 28	चतुर्थी (शुक्ल) 4 29	पंचमी (शुक्ल) 5 30	षष्ठी (शुक्ल) 6 1